जादू नगरी



जोनाथन स्विफ्ट के प्रसिद्ध उपन्यास
'एलिस इन वण्डरलैंड' का सरल हिन्दी रूपान्तर

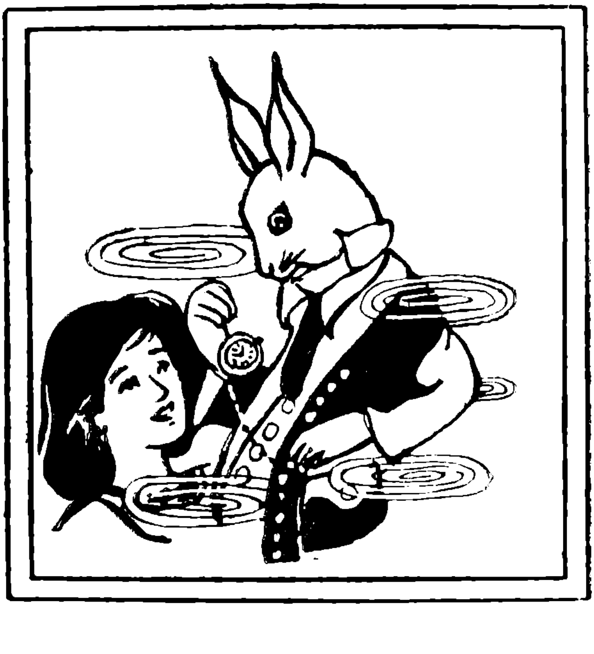
लेविस कैरोल के सुप्रसिद्ध उपन्यास
ALICE IN WONDERLAND का सरल हिन्दी रूपान्तर

मूल्य : पांच रुपये (5.00)

JADOO NAGARI (Novel) by Levis Carrol

जादूनगरी

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास



शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली



जादूनगरी

एक दिन एलिस अपनी बहिन के साथ नदी-किनारे बैठी थी। लेकिन थोड़ी ही देर में वह ऊबने लगी। कोई काम ही नहीं था करने को। चुपचाप बैठे-बैठे आदमी ऊबे नहीं तो क्या करे ! एक-दो बार उसने झांककर उस किताब में देखा जिसे उसकी बहिन पढ़ रही थी। लेकिन उसमें न तो चित्र ही थे और न पात्रों की बातचीत ही। 'भला ऐसी किताब किस काम की, जिसमें न चित्र हैं और न बातचीत !' एलिस ने अपने मन में कहा।

इसलिए वह सोचने लगी कि अब क्या किया जाए, फूलों की माला गूंथी जाए तो कैसा रहे ? वह गुलबहार के फूल चुनने और उनकी माला गूंथने के बारे में सोच ही रही थी कि अचानक एक सफेद खरगोश, जिसकी आंखें गुलाबी रंग की थीं, भागता हुआ उसके पास से निकल गया।

इस खरगोश में ऐसी कोई खास बात नहीं थी। यहां तक कि जब खरगोश ने यह कहा कि, "ओह, मुझे बहुत देर हो गई," तब भी एलिस ने उसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। लेकिन जब उसने देखा कि खरगोश कुछ दूर जाकर रुका और एक जेब-घड़ी निकालकर उसे देखने लगा, और फिर तेज़ कदमों से वहां से भाग पड़ा, तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। यह कैसा खरगोश है ! उसने ऐसा खरगोश तो कभी देखा नहीं, जिसके जेब हो और जो अपने साथ जेबघड़ी भी रखता हो ! वह फौरन उठ

कर उसके पीछे भागी। भागते-भागते उसने देखा कि खरगोश एक झाड़ी के पास अपने बिल में घुस गया।

एलिस ने पास जाकर देखा कि उसका बिल काफी बड़ा है। उसका मन हुआ कि खरगोश का पीछा करना चाहिए। फिर बिना कुछ सोचे-समझे वह भी उसके बिल में उतर गई।

कुछ दूर तक खरगोश का बिल सीधा एक सुरंग की तरह था। एलिस आगे बढ़ती चली गई, लेकिन फिर अचानक आगे चलकर वह बहुत गहरा हो गया। एलिस को सोचने का और अपने को रोकने का मौका भी नहीं मिला, और वह उस कुएं की तरह गहरे बिल में जा गिरी। पहले तो वह कुछ समझ ही नहीं पाई कि वह कहां जा गिरी है। जब उसने आसपास नज़र दौड़ाई तो अपने को एक कमरे में पाया। कमरे में चारों तरफ किताबों की आलमारियां रखी हुई थीं। खूंटियों पर नक्शे और चित्र टंगे हुए थे। लेकिन अभी उसका गिरना बन्द नहीं हुआ था। नीचे गिरते-गिरते उसकी नज़र आलमारी में रखी हुई एक शीशी पर पड़ी, जिस पर लिखा था—'नारंगी का मार्मलेड'। एलिस को यह देखकर बड़ी निराशा हुई कि शीशी खाली थी। उसने नीचे गिरते-गिरते किसी तरह हाथ बढ़ाकर उस शीशी को फिर से एक आलमारी में रख दिया।

वह नीचे की ओर गिरती चली जा रही थी। अब उसे इस तरह एक अन्धे कुएं में गिरते हुए डर भी नहीं लग रहा था। मन में उसने सोचा कि मैं कितनी बहादुर हो गई हूं! घर के ज़ीने से गिरना तो इसके आगे कुछ भी नहीं है।

नीचे, नीचे, और भी नीचे! उसके गिरने का कोई अन्त ही नहीं था। उसने सोचा कि कहीं मैं इस तरह गिरती हुई पृथ्वी के आरपार तो नहीं निकल जाऊंगी? नीचे शायद मैं सीधे न्यूज़ीलैंड या आस्ट्रेलिया पहुंच जाऊं! वहां मुझे लोगों से अदब से पेश आना चाहिए। और गिरते-गिरते बीच अधर में ही उसने झुककर किसीसे अदब से सवाल पूछने की नकल की। फिर तुरंत

उसने सोचा—'नहीं, मैं वहां किसीसे इस तरह का मूर्खतापूर्ण प्रश्न नहीं पूछूंगी, वरना लोग कहेंगे कि देखो, यह कैसी मूर्ख लड़की है ! इसे इतना भी नहीं मालूम कि यह कहां है। और मुझे किसीसे पूछने की ज़रूरत ही क्या ? मैं कहीं पढ़ लूंगी कि मैं कहां आ पहुंची हूं। लेकिन इस गिरने का कभी अन्त भी होगा



तो ? न मालूम कितने सौ मील मैं गिरती चली आई हूं।'

लेकिन उसके गिरने का कोई अन्त नहीं था। इसलिए उसने फिर अपने-आपसे बात करना शुरू किया, 'मेरी प्यारी बिल्ली, डायना, आज मेरे बिना बड़ी दुखी होगी ! आशा है, चाय के वक्त घर के लोग उसकी तश्तरी में दूध डालना नहीं भूलेंगे। आह डायना, कितना अच्छा होता अगर तुम भी मेरे साथ ही होतीं ! यहां तुम्हें चूहे तो मिल ही जाते।' गिरते-गिरते एलिस को नींद आने लगी, और उसे लगा कि वह अपनी बिल्ली के हाथ में हाथ डाले टहल रही है और उससे बातें कर रही है, कि अचानक— घम्-धमाक् ! वह टहनियों और सूखी पत्तियों के एक ढेर पर आ गिरी। अब कहीं जाकर उसका गिरना खत्म हुआ था।

एलिस को कोई चोट नहीं आई। वह फौरन उठ खड़ी हुई। उसने ऊपर देखा, लेकिन वहां बिलकुल अंधेरा था। सामने एक रास्ता था जिसमें अब भी वह सफेद खरगोश भागता हुआ दिखाई दे रहा था। अब देर करना ठीक नहीं था। एलिस फौरन उसके पीछे भागी। एक मोड़ पर एलिस उसके काफी पास जा पहुंची थी। उसने सुना कि वह कह रहा था, "हाय, बड़ी देर हो गई। अब क्या होगा ?"

लेकिन जब एलिस उसका पीछा करती हुई मोड़ के दूसरी ओर पहुंची, तब तक खरगोश गायब हो चुका था। एलिस ने अपने को एक बहुत बड़े कमरे में पाया, जिसकी छत बहुत नीची थी। छत में दीये लटके हुए थे और कमरे में हलकी रोशनी फैली थी। कमरे में चारों तरफ दरवाज़े थे, लेकिन सब में ताला लगा था। एलिस एक-एक दरवाज़े के पास जाकर देखने लगी। सब बन्द थे। वह सोचने लगी कि अब यहां से निकला कैसे जाएगा।

कमरे में घूमते-घूमते वह तीन टांगों की एक छोटी मेज़ के पास पहुंची, जो शीशे की बनी थी। उस मेज़ पर सिवा एक छोटी-सी सुनहरी चाबी के और कुछ नहीं था। एलिस को लगा कि इससे कमरे का कोई दरवाज़ा खोला जा सकता है। लेकिन अफसोस,

वह चाबी किसी भी ताले में न लग सकी। एलिस को बड़ी निराशा हुई। उसने एक बार फिर से कोशिश करने की सोची। इस बार उसने एक पर्दा टंगा हुआ देखा, जिसपर पहले उसकी नज़र नहीं पड़ी थी। उसने परदा हटाया। उसके नीचे एक छोटा-सा दरवाज़ा था। लेकिन वह भी बन्द था। दरवाज़े की लम्बाई पन्द्रह इंच से अधिक नहीं थी। एलिस ने उसके ताले में चाबी लगाई। वाह ! ताला खुल गया।

एलिस बहुत खुश हुई। उसने दरवाज़ा खोला और नीचे झुककर उसमें देखा। वहां से चूहे के बिल जैसी एक संकरी-सी सुरंग जाती थी, जिसकी दूसरी ओर एक बड़ा ही खूबसूरत बाग दिखाई पड़ता था। उसमें बढ़िया-बढ़िया फूल खिले थे और फव्वारे चल रहे थे। इस अंधेरे कमरे से निकलकर उस बाग में घूमने के लिए एलिस का मन मचलने लगा। लेकिन कोई चारा ही नहीं था। वह फिर से मेज के पास लौट आई।

इस बार मेज़ पर उसने एक छोटी-सी शीशी रखी हुई देखी, जो पहले वहां नहीं थी। एलिस को बड़ा अचरज हुआ, पहले कैसे इस शीशी पर उसकी नज़र नहीं पड़ी ! शीशी की गरदन में एक एक कागज़ बंधा था। उसमें बड़े-बड़े सुन्दर अक्षरों में लिखा था —'मुझे पी लो।'

वाह, यह खूब रहा ! 'मुझे पी लो !' लेकिन एलिस इतनी मूर्ख नहीं थी कि शीशी उठाकर उसे पी जाती। इसमें ज़हर भरा हो तो ? उसने इस तरह की कहानियां सुनी और पढ़ी थीं, जिनमें लालच में आकर बच्चे ऐसे काम कर बैठते थे जिसके लिए उन्हें बाद में पछताना पड़ता था। नहीं, एलिस एक समझदार लड़की थी।

उसने शीशी को अच्छी तरह देखा। उसपर कहीं भी 'ज़हर' या 'खतरा' नहीं लिखा था। उसने सोचा, ज़रा चखा तो जाए कि इसमें है क्या। चखने पर उसे लगा कि इसमें कोई बहुत ही स्वादिष्ट चीज़ भरी है। कुछ शर्बत जैसी चीज़ थी जो सचमुच

बड़ी स्वादिष्ट थी। एलिस ने थोड़ी ही देर में शीशी खाली कर डाली।

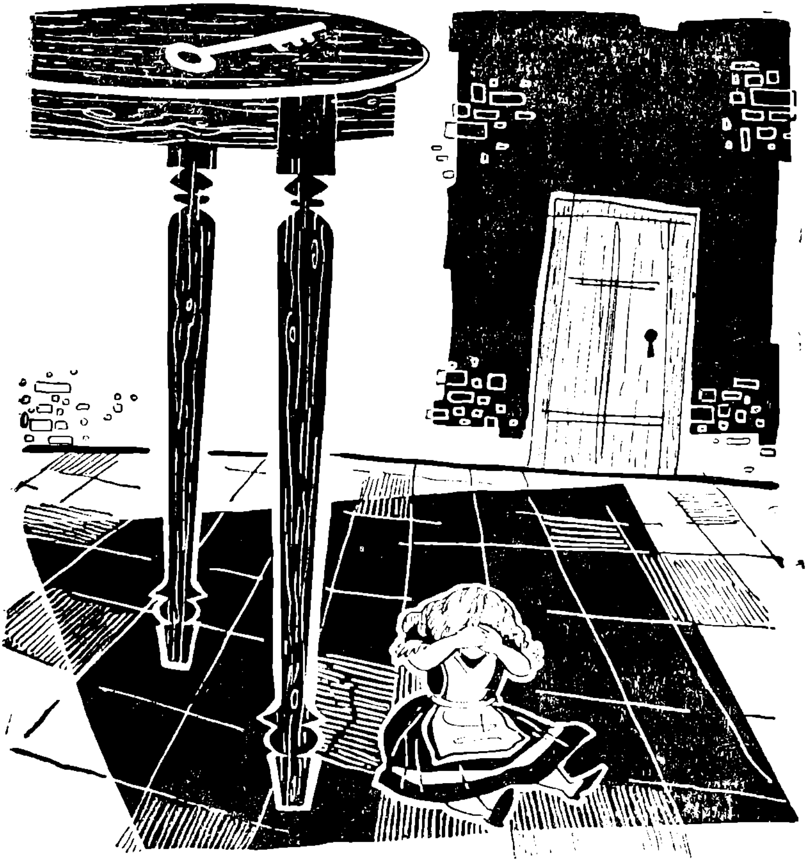
'अरे, यह मुझे क्या हो रहा है ?' एलिस ने अपने-आपसे कहा, 'मैं तो जैसे किसी दूरबीन की तरह सिकुड़ती जा रही हूं।'

और सचमुच यही बात थी। अब वह सिकुड़कर सिर्फ दस इंच की रह गई थी। अचानक यह सोचकर खुशी से उसका चेहरा दमक उठा कि अब वह आसानी से इस अंधेरे कमरे से बाहर निकल सकेगी और उस खूबसूरत बाग में पहुंच सकेगी। वह दौड़ी-दौड़ी उस छोटे से दरवाज़े के पास जा पहुंची।

लेकिन आह, उससे एक गलती हो गई। चाबी तो वह उसी शीशे की मेज़ पर भूल आई थी। वह फिर से लौटकर मेज़ के पास आई। पर अब क्या किया जाए ? वह इतनी छोटी हो गई थी कि उसका हाथ मेज़ तक पहुंच ही नहीं सकता था। अब तो सब चौपट हो गया। उसने बहुत कोशिश की, लेकिन मेज़ का पाया क्या था वह तो जैसे कोई बड़ा भारी खम्भा था और इतना चिकना कि वह बार-बार फिसल पड़ती। शाशे का पाया चिकना तो होगा ही। एलिस को रोना आ गया। वह पाये के पास बैठ कर आंसू बहाने लगी।

'लेकिन अब इस तरह आंसू बहाने से क्या होगा ? बेकार रोओ मत !' उसने अपने-आपसे कहा। अब वह मन ही मन अपने को इस लापरवाही के लिए डांटने लगी, 'तुम्हें चाबी अपने पास रखनी चाहिए थी। अब बैठकर आंसू बहा रही हो ! बन्द करो यह रोना-धोना।' इस तरह अपने को डांटने के बाद उसने अपने मन को समझाने की कोशिश की, 'एलिस तुम तो समझदार लड़की हो। तुम्हें इस तरह रोना नहीं चाहिए। अब रोने से क्या होगा !'

अचानक उसकी नज़र एक छोटे-से डिब्बे पर पड़ी जो मेज़ के नीचे ही पड़ा था। उसने डिब्बा खोला। उसमें एक छोटी-सी केक थी। केक पर किशमिश से बहुत खूबसूरती से लिखा हुआ

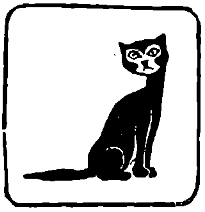


था—'मुझे खा लो ।'

बड़ी अजीब बात थी । लेकिन यहां की तो सभी चीज़ें अजीब थीं । एलिस ने सोचा, 'मुझे इस केक को खा लेना चाहिए । मुमकिन है इसे खाने से मेरी लम्बाई फिर से बढ़ जाए । और अगर इसके खाने से मैं और छोटी हो गई, तब भी कोई बात नहीं । मैं उस दरवाज़े के छेद से निकलकर किसी तरह उस बाग

में तो पहुंच जाऊंगी।'

यह सोचकर वह केक खाने लगी। धीरे-धीरे वह पूरा केक खा गई।



2

लेकिन यह क्या ? केक खाने के बाद एलिस की लम्बाई इतनी तेज़ी से बढ़ने लगी कि उसे लगा कि जैसे उसका सिर आसमान को छू रहा है। जब उसने झुककर अपने पैरों की ओर देखा तो उसके मुंह से चीख निकल गई, 'हाय राम, मेरे पैर कितनी दूर रह गए ! अब मैं इनमें मोज़े और जूते कैसे पहनूंगी, और यहां कौन है जो इस काम में मेरी मदद करेगा !'

वह यह सब सोच ही रही थी कि इतने में अचानक उसका सिर कमरे की छत से जा टकराया। अब उसकी लम्बाई नौ फुट थी। उसने फौरन वह सुनहरी चाबी उठाई और बाग वाले दरवाज़े की ओर बढ़ चली। लेकिन बेचारी एलिस! उसकी लम्बाई-चौड़ाई इतनी बढ़ गई थी कि उस दरवाज़े में वह सिर्फ एक आंख लगाकर बाहर झांक सकती थी। उसमें से उसका हाथ तक बाहर नहीं निकल सकता था। एलिस को रोना आ गया। वह सिसक-सिसककर कहने लगी, 'मैं इतनी बड़ी हो गई और अब भी मुझे रोना आता है। मैं चुप क्यों नहीं हो जाती !' लेकिन उसके आंसू नहीं थमे। झरने की तरह उसके आंसू झर रहे थे। यहां तक कि थोड़ी देर में आंसुओं का पानी पूरे कमरे में फैल गया और छः इंच गहरा एक तालाब-सा बन गया।

अचानक उसे किसीके कदमों की आहट सुनाई दी। उसने

फौरन अपनी आंखे पोंछ लीं और उत्सुकता से देखा कि कौन आ रहा है। यह वही सफेद खरगोश था, जो बड़े ठाठदार कपड़े पहने अकड़कर चल रहा था। उसके एक हाथ में सफेद दस्ताने थे और दूसरे में बड़ा भारी पंखा था। वह बहुत जल्दी में था और बड़बड़ा रहा था, "हे भगवान्, कहीं बेगम साहिबा नाराज़ न हों, मैंने बहुत देर कर दी !" एलिस उस समय इतनी घबराई हुई थी कि किसी से भी सहायता मांगने को तैयार थी। जब खरगोश उसके पास आया तो उसने बहुत ही धीमी और सहमी-सी आवाज़ में कहा, "महाशयजी, ज़रा मेहरबानी करके···!" खरगोश यह सुनते ही चौंक पड़ा। उसके हाथ से पंखा और दस्ताने गिर पड़े और वह छलांग लगाता हुआ तेज़ी से अंधेरे कोने की ओर भाग गया।

एलिस ने पंखा और दस्ताने उठा लिए। कमरे में बड़ी गर्मी थी। वह पंखे से हवा करने लगी, और सोचने लगी, 'आज सब बातें कितनी अजीब हो रही हैं। कल का दिन कैसे मज़े से बीता था ! पता नहीं मैं कितनी बदल गई हूं। कहीं मेरी शक्ल-सूरत अपनी सहेलियों में से किसीकी तरह तो नहीं हो गई ? ऐडा के बाल तो घुंघराले हैं, और नोबेल को कुछ आता नहीं। मैं तो बहुत कुछ जानती हूं, मुझे तो अब भी जोड़-बाकी याद हैं, गिनती भी याद है। देखो न, पांच चौके हुए बारह और छः चौके हुए तेरह और सात चौके हुए···। खैर जाने दो, गिनती-पहाड़े में क्या रखा है ! कोई मुझसे भूगोल के पाठ सुन ले। लन्दन पेरिस की राजधानी है, और पेरिस रोम की राजधानी है और रोम···नहीं-नहीं, यह सब मैं क्या बक रही हूं ? यह तो सब गलत है।' और उसे फिर रुलाई आ गई।

वह अब भी पंखे से हवा करती जा रही थी और सिसक रही थी। उसने दस्तानें भी अपने हाथ में पहन लिए थे। अचानक उसे लगा कि अब उसकी लम्बाई घट रही है। वह फौरन अपने को नापने के लिए टेबल के पाये के पास जा खड़ी हुई। अब उसकी लम्बाई सिर्फ दो फुट रह गई थी। वह तेज़ी से सिकुड़ती जा रही

थी। वह समझ गई कि इसका कारण वह पंखा था, जिससे वह हवा कर रही थी। उसने उसे फौरन दूर फेंक दिया और राहत की सांस लेकर कहा, "हे भगवान्, मैं तो बाल-बाल बची! वरना थोड़ी देर में पंखा झलते-झलते मैं चींटी से भी छोटी रह जाती। चलो, अब बाग में चला जाए!" और वह फिर से उस छोटे-से दरवाज़े की ओर लपकी। लेकिन दुर्भाग्य! दरवाज़ा तो बन्द था और उसकी चाबी उसने फिर से टेबल पर रख दी थी। एलिस अब फिर से इतनी छोटी हो गई कि उसका हाथ वहां तक पहुंच ही नहीं पाता था। वह खीझकर बोली, "हाय, यह सब क्या हो रहा है? इतनी छोटी तो मैं कभी नहीं थी। यह तो बहुत बुरा हुआ।"

इतने में अचानक उसका पैर फिसल गया, और—छपाक्! वह गले तक नमकीन पानी में जा गिरी। पहले तो उसे लगा कि वह किसी समुद्र में गिर पड़ी है, लेकिन फिर जल्दी ही उसने समझ लिया कि यह उसके उन आंसुओं से बना तालाब है, जिन्हें उसने तब गिराया था जब वह नौ फुट लम्बी थी। "उफ, कितना अच्छा होता अगर मैं रोई न होती! लगता है, मैं अपने आंसुओं में डूब मरूंगी। यह तो और भी अजीब बात होगी। लोग कहेंगे कि एलिस अपने आंसुओं में डूब मरी!"

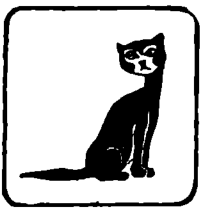
इतने में उसने अपने पास किसीकी छपछपाहट सुनी। उसने सोचा कि कहीं दरियाई घोड़ा तो नहीं है। लेकिन जब वह उसके पास पहुंची तो देखा कि वह एक चूहा था जो उसकी तरह फिसलकर आंसुओं के तालाब में आ गिरा था।

एलिस ने सोचा कि इससे कुछ कहना-सुनना बेकार होगा, लेकिन फिर भी वह बोली, "ओ चूहे, इस तालाब से बाहर निकलने का कोई रास्ता तुम्हें मालूम है? मैं तो तैरते-तैरते थक गई हूं। ऐ चूहे!" और उसे अपने भाई की व्याकरण की पुस्तक का कारकवाला पाठ याद आ गया। वह बड़बड़ाने लगी—"एक चूहे ने, चूहे को, चूहे से, चूहे के लिए···हे चूहे!" इसपर चूहे

ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और अपनी छोटी-सी एक आंख झपका ली। एलिस को शरारत सूझी। उसने पूछा, "चूहे साहब, बिल्ली आपकी कौन लगती है ?" यह सुनकर चूहा उछल पड़ा पड़ा और बुरी तरह कांपने लगा। एलिस ने फौरन कहा, "माफ करना मैं बिलकुल भूल गई थी कि बिल्ली आपको पसन्द नहीं है।"

"ऊं, बिल्ली पसन्द नहीं है ?" चूहे ने अपनी पतली आवाज में कहा, "अगर तुम मेरी जगह होतीं तो क्या बिल्ली को पसन्द करतीं ? बड़ी आई हो।"

चूहा तैरता हुआ उससे दूर निकल गया। एलिस ने किसी तरह खुशामद करके उसे मनाया। लेकिन अब आंसुओं के तालाब में भीड़ बढ़ती जा रही थी। तरह-तरह के पशु-पक्षी उसमें आ गिरे थे और किसी तरह तैरकर किनारे लगने की कोशिश कर रहे थे। उसमें बतख थी; तोता और उल्लू थे; बड़ी भारी चोंचवाला डोडो और गरुड़ पक्षी थे। अब सब लोग एलिस के पीछे कतार बांधकर तैरने लगे। किसी तरह सब किनारे लगे।



3

आंसुओं के तालाब के किनारे अजीब-अजीब-से जानवरों की भीड़ थी। एलिस भी उनके बीच बैठी थी। इस समय वह बतख से थोड़ी-सी बड़ी थी। सब भीगे हुए थे। कोई अपने पंख फड़-फड़ा रहा था और कोई जीभ से चाट-चाटकर अपनी देह सुखा रहा था। इस समय सबका मन उदास था।

अब यह प्रश्न उठा कि अपने को सुखाया किस तरह जाए। सब आपस में इस सवाल पर बहस करने लगे। सब अपनी-अपनी बोली बोल रहे थे। एलिस को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह सबकी बोली समझती है और सब उसकी बात समझ लेते हैं। गरमागरम बहस जारी थी। इतने में चूहे ने अपनी पतली आवाज़ में चीखकर सबको शान्त होने और चुपचाप बैठने का आदेश दिया। फिर उसने एक ऊटपटांग लेक्चर दिया, जिसमें वह बार बार इतिहास के उदाहरण देता था।

एलिस ने चिढ़कर कहा, "लेकिन इससे क्या होगा, हम लोग अब भी वैसे के वैसे पानी में भीगे हुए हैं! तुम्हारे लेक्चर से मेरा बदन बिलकुल भी नहीं सूखा।"

इतने में डोडो खड़ा होते हुए गम्भीरता से बोला, "ऐसी हालत में हम लोगों को 'कोकस दौड़' लगानी चाहिए।"

"कोकस दौड़ से आपका क्या मतलब है ?" एलिस ने पूछा।

"अभी बताता हूं। दौड़ को समझने का सबसे अच्छा तरीका तो यह है कि हम लोग उसे शुरू कर दें।" यह कहकर उसने एक घेरा बना दिया। सब लोग उसके आसपास खड़े हो गए। फिर जहां जिसके मन में आया दौड़ने लगा। दौड़ते-दोड़ते थोड़ी देर में लगभग सभी लोग सूख गए। यहां तक कि एलिस के कपड़े भी सूख गए। अचानक डोडो चिल्लाया, "ठहर जाओ! दौड़ खतम हो गई।"

सब लोग रुक गए। सब बुरी तरह हांफ रहे थे। उन्होंने पूछना शुरू किया, "लेकिन इस दौड़ में जीता कौन ?"

डोडो बोला, "हर कोई जीता और सबको इनाम मिलना चाहिए।"

"लेकिन इनाम दे कौन रहा है ?" सब एक साथ बोले।

"क्यों, वह देवी !" डोडो ने एलिस की ओर इशारा करते हुए कहा। फौरन सारे पशु-पक्षी एलिस को घेरकर खड़े हो गए और चिल्लाने लगे, "इनाम लाओ! इनाम लाओ!"

एलिस की समझ में नहीं आया कि क्या करे। घबराकर



उसने अपनी जेब में हाथ डाला तो मिठाइयोंवाली पुड़िया मिल गई। सौभाग्य से आंसुओं में भीगने पर भी मिठाइयां खराब नहीं हुई थीं। एलिस ने मिठाई बांटनी शुरू की। संयोग से मिठाइयां

गिनती में बराबर निकलीं और हरेक को एक-एक मिल गई।

इतने में चूहा बोला, "लेकिन भाइयो, इस लड़की को भी इनाम मिलना चाहिए।"

"हां, हां, क्यों नहीं!" डोडो ने गम्भीरता से कहा, "लड़की, तुम्हारी जेब में और क्या है?"

"सिर्फ एक अंगुश्ताना है।" एलिस ने दुखी स्वर से कहा।

"तो निकालो उसे, लाओ इधर दो!" डोडो ने आदेश के स्वर में कहा। फिर ये सब लोग एलिस को घेरकर खड़े हो गए। डोडो ने बड़ी शान से अंगुश्ताना लिया और उसे फिर से एलिस को भेंट कर दिया। सब लोगों ने खुश होकर तालियां बजाईं। एलिस को यह बड़ा भद्दा लगा। लेकिन सब लोग इतने गम्भीर थे कि एलिस को हंसने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी। वह उनका मज़ाक नहीं बना सकी। झुककर उसने अपनी ही चीज़ को भेंट के रूप में स्वीकार कर लिया।

इसके बाद चूहे ने एक कविता सुनाई जो उसकी पूंछ की तरह लम्बी थी। एलिस को बार-बार अपनी बिल्ली डायना याद आ रही थी। अचानक उसने उसका नाम ले लिया। बिल्ली का नाम सुनते ही वहां हड़बड़ी मच गई। सब लोग भागने का रास्ता ढूंढ़ने लगे। एक चिड़िया ने अपने पंखों को ठीक किया और कहा, "भाई अब रात बहुत बढ़ रही है, मुझे घर चलना चाहिए। रात की हवा से मेरा गला खराब हो जाता है!" इसी तरह सबने कोई न कोई बहाना बनाया। एक-एक करके सब वहां से चलते बने। थोड़ी ही देर में एलिस अकेली रह गई।

"कितना अच्छा होता अगर मैंने डायना का नाम न लिया होता!" उसने बहुत दुखी स्वर में कहा, "यहां कोई मेरी बिल्ली को पसन्द नहीं करता। हालांकि इतना तय है कि मेरी बिल्ली दुनिया में सबसे अच्छी है। हाय, अब कब मैं अपनी डायना से मिल पाऊंगी!" उसे रोना आ गया। लेकिन थोड़ी ही देर में चूहा वापस लौट आया और उसे अपनी कहानी सुनाने लगा।

4



थोड़ी देर में सफेद खरगोश भी उधर भटकता हुआ आ निकला। शायद वह किसी चीज़ की खोज में था। वह इधर-उधर ढूंढ़ता हुआ चल रहा था। एलिस ने फौरन समझ लिया कि वह क्या खोज रहा है। वह वही पंखा और दस्ताने खोज रहा था। एलिस ने भी उसकी मदद करनी शुरू की। लेकिन इस बीच जैसे सब कुछ बदल गया था। शीशे की टेबल और वह छोटा दरवाज़ा वगैरह सब कुछ गायब हो चुका था।

इतने में खरगोश ने उसे देख लिया। उसे देखते ही वह कुछ नाराज़ होकर उसे डांटने लगा, "क्यों मेरी! यहां क्या कर रही हो तुम? जाओ, फौरन घर जाओ! जाओ, मेरे लिए एक जोड़ा दस्ताने और एक पंखा लेती आओ! चलो, जल्दी करो!"

एलिस उसकी बात से इतनी डरी कि फौरन उस दिशा में भागने लगी जिधर वह इशारा कर रहा था। वह समझ रही थी कि खरगोश ने गलती से उसे अपनी नौकरानी समझ लिया था। लेकिन फिर भी वह भागती ही रही। थोड़ी देर में वह भागते-भागते एक छोटे-से मकान के सामने पहुंची, जिसके दरवाज़े पर पीतल की एक प्लेट पर लिखा था—'स० खरगोश'। एलिस बिना दरवाज़ा खटखटाए ही अन्दर घुस गई, क्योंकि उसे डर था कि कहीं यहां असली मेरी से मुलाक़ात न हो जाए। अन्दर एक छोटे-से लेकिन बढ़िया ढंग से सजे हुए कमरे में, खिड़की के पास एक

टेबल पर एक पंखा और दो-तीन जोड़े दस्ताने रखे हुए थे।

वह उन्हें लेकर बाहर निकलने ही वाली थी कि अचानक उसकी नज़र एक कोने में आईने के पास रखी हुई बोतल पर पड़ी। उसने यों ही उत्सुकतावश उठाकर उसे होठों से लगा लिया। मन में उसे लग रहा था कि शायद इस बोतल की दवाई से उसकी लम्बाई बढ़ जाए और वह अपने साधारण कद में आ जाए, क्योंकि इस नन्हे-से कद में रहते-रहते उसकी तबीयत ऊब गई थी।

और सचमुच उसका शरीर बढ़ने लगा। यहां तक कि वह कमरा उसके लिए छोटा पड़ने लगा। खरगोश का वह कमरा इतना छोटा था कि एलिस को अपना एक हाथ खिड़की के बाहर और टांग दरवाज़े के बाहर निकालकर किसी तरह सिकुड़कर लेट जाना पड़ा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करे। झुके-झुके उसकी गर्दन दर्द करने लगी। दवाई का असर कम हो गया। लम्बाई का बढ़ना भी बन्द हो गया, लेकिन फिर भी उसे इस छोटे-से खिलौनेनुमा मकान में बड़ी तकलीफ हो रही थी।

इतने में खरगोश वहां लौट आया। लेकिन घर में घुसना उसके लिए सम्भव नहीं हो सका, क्योंकि एलिस का पैर दरवाज़े के बीच में फंसा हुआ था। वह घबराकर भागा और खिड़की के सामने खड़ा होकर अपनी नौकरानी के नाम से एलिस को डांटने लगा। एलिस को किसी बात का डर नहीं था, क्योंकि खरगोश के मुकाबले उसकी लम्बाई-चौड़ाई कई सौ गुना बड़ी थी।

उसने खिड़की में हाथ डालकर खरगोश की ओर झपट्टा मारा। खरगोश चीखता हुआ भागा और शीशे के दरवाज़े से टकराकर गिर पड़ा। शीशे के टूटने की आवाज़ से एलिस ने समझ लिया कि क्या हुआ है।

खरगोश ने नौकरों और पड़ोसियों को इकट्ठा कर लिया। सब घबराए हुए थे। सीढ़ियां मंगाई गईं और ऊपर चढ़ने की तैयारी हुई। उनमें से एक ऊपर चढ़ा। उसे देखकर सब चढ़ने लगे। सीढ़ी टूट गई और सब ज़मीन पर आ गिरे।



फिर सबने पत्थर फेंकना शुरू किया। छोटी-छोटी कंकड़ियां खिड़की से होकर एलिस पर गिरने लगीं। उसने डांटकर कहा, “देखो, भला चाहते हो तो यह सब बन्द कर दो!” फौरन खामोशी छा गई।

इतने में एलिस ने आश्चर्य से देखा कि जो पत्थर उन्होंने उसपर फेंके थे वे केक और बिस्कुट में बदल गए। उसने उन्हें

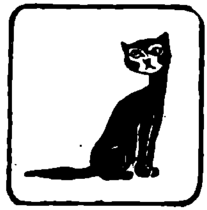
उठाकर खाना शुरू किया। देखते-देखते फिर से वह सिकुड़ने लगी और उसका कद नन्हा-सा रह गया। ज्योंही वह उस मकान के दरवाज़े से निकलने लायक हुई, वह फौरन निकल भागी। बाहर आकर उसने देखा कि वहां कई तरह के जीव-जन्तुओं की भीड़ लगी है। उन लोगों ने उसे घेरना चाहा, लेकिन वह भाग निकली।

भागते-भागते वह एक जंगल में जा पहुंची। थोड़ी खुली जगह पाकर वह रुक गई और इधर-उधर घूमने लगी।

घूमते-घूमते उसने सोचा कि सबसे पहले मुझे अपने साधारण कद में आ जाना चाहिए। और फिर उस खूबसूरत बगीचे में टहलने चलना चाहिए। अचानक उसे किसीके भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। उसने झाड़ियों के बीच में झांककर देखा। वहां कुत्ते का एक बड़ा-सा पिल्ला गुर्रा रहा था और उसकी ओर अपना पंजा बढ़ा रहा था। एलिस किसी तरह वहां से बचकर निकल भागी। कुत्ता भौंकता रहा और वह भागती ही रही।

वह भागते-भागते काफी दूर निकल गई। थोड़ी देर में वह थक गई। उसे भूख लग आई। उसने आसपास देखा। वहां घास-फूस और फूल-पत्तियों के अलावा खाने-पीने के लिए कुछ नहीं था। वह जहां खड़ी थी, वहां एक बड़ा-सा कुकुरमुत्ता उगा हुआ था, जिसकी लम्बाई उसके बराबर ही थी। एलिस को यह देख कर बड़ा बुरा लगा कि उसकी लम्बाई एक कुकुरमुत्ते के बराबर हो गई है। कुकुरमुत्ते के आसपास और नीचे झांककर देखा। लेकिन उसे कुछ खास नज़र नहीं आया। अन्त में उसने तय किया कि ज़रा देखा तो जाए कि इसके ऊपर क्या है।

उसने पंजे के बल उचककर ऊपर देखा तो उसकी आंखें फौरन एक बड़े भारी झिनगे की आंखों से जा मिलीं। वह आराम से कुकुरमुत्ते पर हाथ बांधे बैठा था और एक लम्बा-सा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। वह हुक्का पीने में इतना मग्न था कि उसे एलिस या किसी और की परवाह नहीं थी।



5

थोड़ी देर तक एलिस और वह झिनगा एक-दूसरे की ओर चुपचाप देखते रहे। अन्त में झिनगे ने अपने मुंह से हुक्के की निगाली अलग की और ऊंघती हुई आवाज़ में पूछा, "आंय, कौन हो तुम ?"

उसके इस तरह पूछने से एलिस को उससे बात तक करने की इच्छा नहीं हुई। वह उससे कुछ डर भी रही थी। अन्त में कुछ सकुचाते हुए वह बोली, "मैं खुद नहीं जानती महाशय जी ! हां, इतना मैं ज़रूर जानती हूं कि मैं कौन हूं, लेकिन आज सुबह से अब तक न मालूम कितनी बार मैं बदली हूं।"

झिनगे ने उसे घुड़कते हुए कहा, "क्या बकती हो तुम ? साफ-साफ बताओ !"

"मैं क्या बताऊं आपको, खुद मेरी समझ में नहीं आता ! असल में बात यह है कि मैं अपने असली रूप में नहीं हूं, आप तो जानते ही हैं।"

"मैं कुछ नहीं जानता !" झिनगे ने कहा।

एलिस बोली, "मुश्किल यह है कि मैं इससे ज़्यादा साफ-साफ आपको और कुछ नहीं बता सकती। खुद मेरी ही समझ में कुछ नहीं आ रहा है ! एक ही दिन में जब इतने रूप बदलने पड़ते हैं तो बड़ी मुश्किल पड़ जाती है।"

"कोई मुश्किल नहीं होती।" झिनगा बोला।

एलिस को लगा कि यह इस समय कुछ नाराज़ है, और इससे बातें करना बेकार है, इसलिए वह वहां से जाने लगी।

"सुनो, ठहरो !" झिनगे ने उसे बुलाते हुए कहा, "मुझे तुमसे कुछ खास बात करनी है।"

एलिस रुक गई। वह बोला, "ज़रा वह कविता तो सुनाओ —'पिता विलियम, तुम बूढ़े हो' !"

एलिस हाथ बांधकर कविता दुहराने लगी। जब वह कविता सुना चुकी तो झिनगा बोला, "यह सही नहीं है !"

"हां, हो सकता है, एकाध शब्द इधर-उधर हो गया हो।"

"नहीं, यह शुरू से लेकर आखिर तक गलत है। तुम्हें कुछ नहीं आता।" फिर कुछ देर सोचने के बाद वह बोला, "तुम किस रूप में रहना चाहती हो ? यह लम्बाई तुम्हें पसन्द नहीं है ?"

एलिस ने फौरन जवाब दिया, "नहीं बिलकुल नहीं ! मुझे रूप की इतनी चिंता नहीं है, लेकिन यह बार-बार लम्बाई का बढ़ना-घटना किसीको अच्छा नहीं लगेगा, आप तो जानते ही है।"

"नहीं, मैं नहीं जानता !" झिनगा बोला, "खैर, अगर तुम इस कुकुरमुत्ता के इस ओर का टुकड़ा खाओगी तो तुम्हारी लम्बाई बढ़ जाएगी और दूसरी ओर के टुकड़े से घट जाएगी।" यह कहकर वह आलस तोड़ता हुआ उठा और अपना हुक्का संभालकर रेंगता हुआ नीचे उतर आया और फिर घास में घुस गया।

एलिस थोड़ी देर तक सोचती रही। उसकी समझ में नहीं आया कि किस तरफ से खाए। कुकुरमुत्ता बिलकुल गोल था। अन्त में उसने दाहिनी तरफ से उसका एक टुकड़ा तोड़कर चबाना शुरू किया और खटाक से उसकी ठुड्डी उसके पैरों से आ टकराई। देखते-देखते उसका आकार बहुत छोटा हो गया। अब उसे मालूम हो गया कि दूसरी तरफ का टुकड़ा खाने से उसकी

लम्बाई बढ़ सकती है।

उसने बाएं हाथवाला टुकड़ा खाया और धीरे-धीरे उसकी लम्बाई बढ़ने लगी, और एकदम इतनी बढ़ गई कि उसका सिर पेड़ों की फुनगी से टकराने लगा। वह बहुत घबराई। उसके मुंह से एक चीख निकल गई। वहीं एक पेड़ में एक बड़ा-सा कबूतर छिपा बैठा था। वह घबराकर चीखा, "सांप, हाय सांप !" और पंख फड़फड़ाता हुआ उड़ गया। उड़ते समय वह बहुत ज़ोरों से अपने पंखों से एलिस के चेहरे पर झपट्टे मारता गया।

"नहीं, मैं सांप नहीं हूं !" एलिस ने नाराज़ होकर कहा, "बेकार तंग न करो मुझे !"

"सांप ! मैं फिर कहता हूं सांप !" कबूतर ने दुहराया। लेकिन इस बार उसकी आवाज़ कुछ कम घबराई हुई थी और लगता था जैसे वह बड़ा दुखी है। एक सिसकी लेते हुए वह कहने लगा, "मैंने बहुत कोशिश की, लेकिन उनसे बचना मुश्किल है। मैंने पेड़ों की जड़ें देखीं, तने देखे, झाड़-झंखाड़ देखे, लेकिन कहीं मुझे उन्होंने चैन नहीं लेने दिया। रात-दिन मैं उनसे बचने और ऐसी जगह खोजने की कोशिश करता हूं जहां मैं आराम से रह सकूं। लेकिन सब बेकार ! देखो न, तीन हफ्ते से मैं सोया तक नहीं ! और कभी-कभी मैंने जंगल के सबसे ऊंचे पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर डेरा डालने की कोशिश की कि बस, वहां भी सांप।"

"लेकिन मैं सांप नहीं हूं, मेरी बात तो सुनो ! मैं···मैं···मैं तो···"

"हूं ! तो कौन हो तुम ?" कबूतर बोला। "लगता है, तुम कोई बहाना खोज रही हो।"

"मैं···मैं तो एक छोटी-सी लड़की हूं।"

"खूब ! अच्छी गप सुनाई ! मैंने अपनी ज़िन्दगी में बहुत-सी लड़कियां देखी हैं। लेकिन इतनी लम्बी गरदन तो मैंने आज तक किसीकी नहीं देखी। नहीं, नहीं ! तुम सांप हो ! बेकार मुझे बह-

काओ मत। और तुम अण्डे खाती हो! तुम अण्डे की खोज में निकली हो!"

"हां, मैं अण्डे खाती हूं। लेकिन मुझे कच्चे अण्डे अच्छे नहीं लगते हैं। और फिर मैं कबूतर के अण्डे कहां खाती हूं!"

"खैर, अब जाओ यहां से!" कबूतर चिढ़कर बोला और फिर से अपने घोंसले में आ बैठा।

एलिस ने किसी तरह अपनी गरदन सिकोड़ी और आगे बढ़ना शुरू किया। लेकिन बार-बार उसकी गरदन पेड़ों में उलझ जाती थी और उसे रुककर छुड़ाना पड़ता था। उसके लिए दो कदम चलना भी मुश्किल हो रहा था। अन्त में उसे याद आया कि अभी तक उसके दोनों हाथों में कुकुरमुत्ते के टुकड़े थे। उसने बारी-बारी से उन्हें खाना शुरू कर दिया। कभी वह लम्बी होती थी और कभी छोटी। अन्त में किसी तरह वह अपने साधारण कद में आ गई।

वह चलती जा रही थी और सोच रही थी—इस लम्बाई में मैं उस छोटे-से दरवाज़े से निकलकर उस बाग में कैसे जा सकूंगी, जो इतना खूबसूरत है? अचानक चलते-चलते वह एक खुली जगह में पहुंच गई, जहां एक छोटा-सा मकान बना हुआ था। मकान की ऊंचाई सिर्फ चार फुट थी। उसने सोचा, इस मकान में कौन-से लोग रहते हैं? मैं अपनी इस लम्बाई में उन लोगों से मिल भी नहीं सकती। वे मुझे देखकर डर जाएंगे। इसलिए फिर उसने अपने दाहिने हाथवाला टुकड़ा खाना शुरू किया, और जब तक उसकी लम्बाई सिर्फ नौ इंच नहीं रह गई, तब तक उसने उस घर के पास जाने की हिम्मत नहीं की।

6



एलिस एक-दो मिनट तक उस मकान की ओर देखती रही और यह सोचती रही कि अब क्या किया जाए। इतने में एक शानदार वर्दी पहने किसीका अर्दली दौड़ता हुआ वहां पहुंचा। एलिस ने उसे अर्दली ही समझा, क्योंकि वह वैसे ही कपड़े पहने था, हालांकि शक्ल उसकी बिलकुल मछली की तरह थी।

अर्दली ने आकर ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया। अन्दर से एक दूसरा अर्दली निकला। उसका चेहरा गोल था और आंखें बड़ी-बड़ी थीं। वह देखने में बिलकुल मेंढक मालूम होता था। एलिस को यह सब देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उनकी बात-चीत सुनने के लिए चुपके-से और पास आ गई।

मछली की शक्लवाले अर्दली ने अपने हाथ के नीचे से एक बड़ा भारी लिफाफा निकाला, जो लम्बाई-चौड़ाई में उसके बराबर ही था। वह लिफाफा देते हुए गम्भीर स्वर में बोला, "यह डचेज़ के लिए है। बेगम ने उन्हें खेल में आने का न्यौता भेजा है।"

मेंढक की शक्ल वाले अर्दली ने उसी तरह गम्भीर आवाज़ में उसकी बात दुहरा दी, "यह डचेज़ के लिए है। बेगम ने उन्हें खेल में आने का न्यौता भेजा है।"

दोनों अर्दलियों ने झुककर एक दूसरे को सलाम किया। झुकते समय दोनों के सिर के बाल, जो नकली-से लगते थे, एक दूसरे में

उलझ गए। एलिस को यह देख हंसी आई। अन्त में उसकी हंसी रुकी ही नहीं और वह कुछ दूर जाकर खूब जी भरकर हंसी। जब वह लौटी तो मछली की शक्लवाला अर्दली वहां से जा चुका था। दूसरा अर्दली वहीं दरवाज़े के पास ज़मीन पर बैठा था और बेवकूफ की तरह आंखें फाड़े आसमान की तरफ देख रहा था। एलिस सकुचाती हुई दरवाज़े के पास पहुंची और उसे खटखटाने लगी।

अर्दली थोड़ी देर चुप बैठा रहा, फिर बोला, "इस तरह खट-खटाने से कोई लाभ नहीं होगा! इसके दो कारण हैं।" फिर वह उंगलियों पर गिनते हुए बोला, "एक, क्योंकि मैं भी तुम्हारी तरह इस घर से बाहर हूं। दूसरा, अन्दर वे लोग इतना शोर मचा रहे हैं कि शायद कोई तुम्हारी बात न सुन सके।"

और सचमुच अन्दर बहुत शोर मचा हुआ था। कोई चीख-चीखकर रो रहा था और कोई ज़ोरों से छींक रहा था। बार-बार किसी न किसी चीज़ के ज़ोरों से गिरकर फूटने की आवाज़ आ रही थी, जैसे किसीने कोई तश्तरी या केतली उठाकर फेंक दी हो। थोड़ी देर में दरवाज़ा खुला और अन्दर से एक बड़ी भारी तश्तरी हवा में नाचती हुई बाहर आ गई। बाहर आकर वह सीधी अर्दली की खोपड़ी से टकराई और फिर एक पेड़ से लगकर चूर-चूर हो गई।

अर्दली पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। वह कह रहा था, "मैं तो यहीं बैठा रहूंगा, कल तक···और हो सकता है परसों तक!"

एलिस जरा ज़ोर से बोली, "लेकिन मैं अन्दर कैसे जाऊं?"

अर्दली बोला, "क्या सचमुच तुम्हें अन्दर जाना है? यह पहला सवाल है। पहले यह तय कर लो कि क्या सचमुच अन्दर जाना है?"

एलिस को उसका यह सवाल कुछ अजीब-सा लगा। वह कुनमुनाकर रह गई। उसने सोचा कि इससे बात करना बेकार

है, यह बिलकुल बेवकूफ मालूम होता है। मुझे खुद अन्दर चले जाना चाहिए। यह सोचकर वह अन्दर घुस गई।

अन्दर घुसते ही वह एक बड़े-से रसोईघर में पहुंची, जिसमें धुआं भरा था। डचेज़ कमरे के बीच में बैठी एक बच्चे को हिला रही थी। बावर्चिन चूल्हे के ऊपर झुकी एक बड़े-से हंडे में करछुल चला रही थी। एलिस को बहुत ज़ोर की छींक आई। उसे लगा कि हंडे में जो चीज़ पक रही है, उसमें खूब मिर्च पड़ी होगी क्योंकि हवा में मिर्च की गन्ध भरी थी। यहां तक कि डचेज़ भी बार-बार छींक उठती थी। बच्चा तो बराबर छींक रहा था और ज़ोरों से चीख रहा था। कमरे में सिर्फ दो प्राणी नहीं छींक रहे थे। एक तो बावर्चिन खुद थी और दूसरी थी एक बड़ी बिल्ली, जो चूल्हे के पास ही बैठी मुस्करा रही थी।

एलिस ने कुछ सकुचाते हुए डचेज़ से पूछा, "क्या मेहरबानी करके ज़रा आप मुझे बताएंगी कि आपकी यह बिल्ली इस तरह मुस्करा क्यों रही है?"

डचेज़ बोली, "यह चेशायर की बिल्ली है इसीलिए, सुअर!"

एलिस ने जब यह आखिरी शब्द सुना तो वह चौंककर पीछे हट गई। उसे बहुत बुरा लगा। लेकिन फिर उसे मालूम हो गया कि असल में यह उस बच्चे के लिए कहा गया था। इसलिए उसने फिर हिम्मत की और कहा, "मैं नहीं जानती कि चेशायर की बिल्लियां हंसती ही रहती हैं, मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि बिल्लियां हंस भी सकती हैं या नहीं।"

"असल में बात यह है कि तुम्हें कुछ पता नहीं, तुम कुछ नहीं जानतीं।" डचेज़ ने कहा।

एलिस को उसका यह जवाब बड़ा बुरा लगा। वह यह सोचने लगी कि कोई अच्छा विषय ढूंढ़ा जाए, ताकि इससे बात-चीत ज़रा प्रेमपूर्वक हो सके। जब वह यह सोच ही रही थी कि बावर्चिन ने हण्डा चूल्हे से नीचे उतारा और एक तरफ रख दिया। फिर वह, जो भी उसके हाथ में आने लगा, डचेज़ और

बच्चे की ओर फेंकने लगी—पहले चिमटा फेंका, फिर कुछ छोटी कढ़ाइयां फेंकीं। फिर प्लेट और तश्तरियों की बारी आई। बच्चा इतनी ज़ोर से रो रहा था कि यह कहना मुश्किल था कि उसे चोट लग रही थी या नहीं।

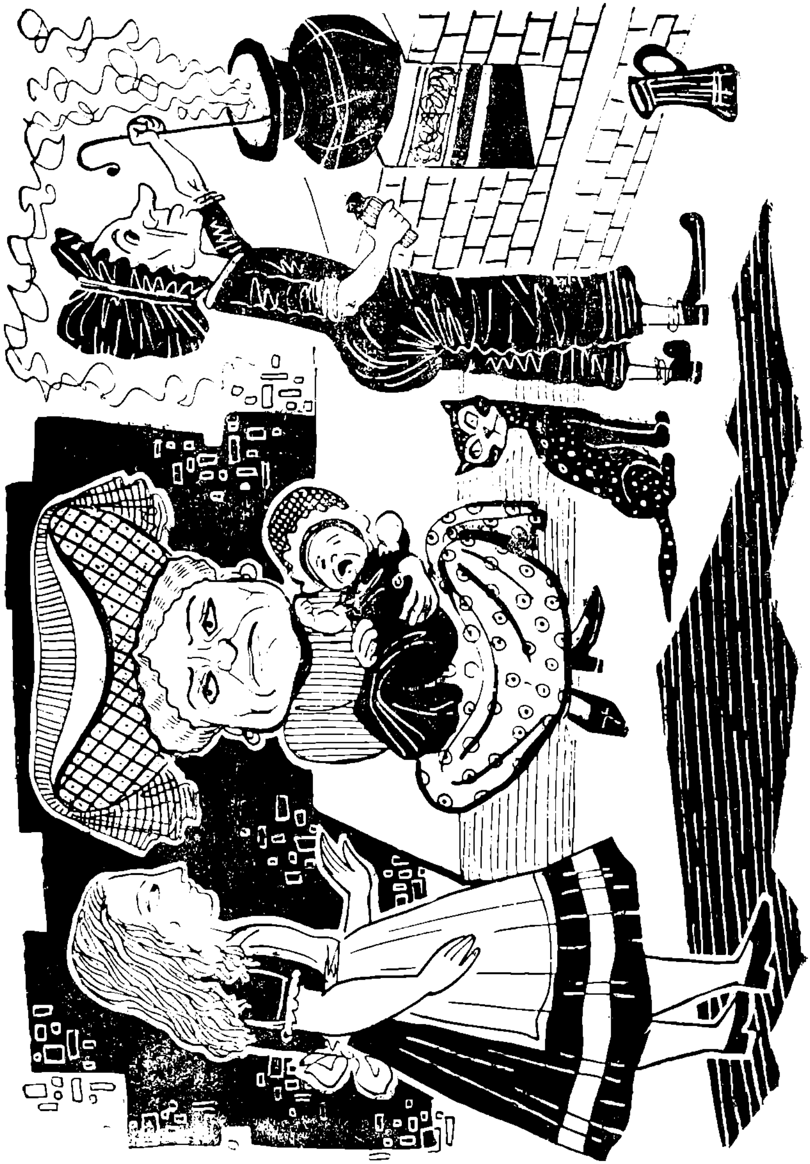
"अरे, ज़रा संभालकर ! यह क्या कर रही हो तुम ?" एलिस एक तरफ उछलती हुई वोली, "देखो-देखो, उसे चोट आ जाएगी। उसकी नाक न कट जाए कहीं !" और सचमुच एक बड़ी कढ़ाई बच्चे की नाक के पास से होकर गुज़री।

इसपर डचेज़ ने उसे डांटकर कहा, "बेकार बीच में न पड़ो, लोग अपना-अपना काम क्यों नहीं करते ! अगर सब अपना-अपना काम करने लगें तो दुनिया की रफ्तार बढ़ जाए।"

"लेकिन इससे कोई फायदा नहीं होगा !" एलिस ने इस बात से कुछ प्रसन्न होकर कहा कि अब उसे भी अपना ज्ञान प्रदर्शित करने का मौका मिलेगा, "ज़रा सोचिए तो सही, अगर दुनिया तेज़ी से घूमने लगे तो क्या हो ? आप जानती ही हैं कि पृथ्वी चौबीस घण्टे में अपनी धुरी पर घूमती है..."

"क्या कहा, छुरी पर ? डचेज़ बोली, "इसका सिर काट लो।"

एलिस ने फौरन बावर्चिन की ओर देखा। लेकिन वह चुपचाप अपना काम करती रही और ज़मीन पर रखे हुए हण्डे में करछुल घुमाती रही। डचेज़ बच्चे को दूध पिला रही थी। उसे सुलाने के लिए उसने एक लोरी गाना शुरू कर दिया। हर लाइन के बाद वह एक बार बच्चे को खूब ज़ोर से झकझोर डालती थी। लोरी का अर्थ था, "अपने छोटे बच्चे को हमेशा डांटते रहो, और जब वह छींके तब उसे खूब पीटो। वह ऐसा सिर्फ इसलिए करता है कि लोगों को चिढ़ा सके, क्योंकि वह जानता है कि इससे लोग चिढ़ते हैं।" जब गाना खत्म हो गया तो बावर्चिन और बच्चे ने साथ मिलकर उसकी आखिरी पंक्ति दुहराई।



"लो ! अगर तुम चाहो, तो इसे कुछ देर खिला सकती हो। मुझे ज़रा बेगम के साथ खेलने जाना है। इसलिए मेरे पास वक्त नहीं है।" यह कहकर वह कमरे से बाहर निकल गई। जाते समय वह बच्चे को ज़मीन पर ही छोड़ गई। बावर्चिन ने उसके पीछे एक बड़ी-सी कढ़ाई फेंकी, लेकिन संयोग से वह बच गई।

एलिस ने बड़ी मुश्किल से बच्चे को उठाया, क्योंकि वह अजीब शक्ल-सूरत का बच्चा था, जो अपने हाथ-पांव को कड़े करके चारों ओर फैलाए रहता था। बच्चा कुछ अजीब तरह से नाक सिकोड़ रहा था। एलिस को बच्चा खिलाना आता था। वह उसकी देखभाल भी जानती थी। लेकिन यह बच्चा कुछ अजीब तरह की हरकतें करने लगा। कभी-कभी वह गुर्रा उठता था और एलिस उसे डांट देती थी।

लेकिन थोड़ी देर बाद बच्चा फिर एक बार कुनमुनाया और जब एलिस ने उसे देखा तो उसकी शक्ल उसे कुछ और ही नज़र आई। पहले तो एलिस को लगा कि उसने सिसकते हुए अपना मुंह सिकोड़ लिया है। लेकिन ऐसी कोई बात नहीं थी। उसकी आंखों में आंसू नहीं थे। उसकी शक्ल तो धीरे-धीरे सुअर के बच्चे जैसी होती जा रही थी।

अब एलिस को कोई सन्देह नहीं था। वह सुअर ही था। एक सुअर को उठाकर चलना उसे बेकार मालूम हुआ। उसने उसे ज़मीन पर उतार दिया। वह कुछ सोचती हुई लौट रही थी कि अचानक उसकी नज़र सामने एक पेड़ पर पड़ गई और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पेड़ की डालियों के बीच वह चेशायर वाली बिल्ली बैठी हुई थी। एलिस की ओर देखकर वह मुस्कराने लगी।

एलिस ने कुछ सकुचाते हुए और यह सोचकर कि कहीं बिल्ली नाराज़ न हो जाए, कुछ डरते हुए कहा, "चेशायर की बिल्ली, क्या मेहरबानी करके तुम मुझे इतना बता दोगी कि मुझे यहां से किस दिशा में जाना चाहिए?"

बिल्ली बोली, "यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम जाना कहां चाहती हो !"

"कहीं भी।" फिर एलिस ने उससे दूसरा सवाल पूछा, "अच्छा, पहले ज़रा यह तो बताओ कि यहां आसपास किस तरह के लोग रहते हैं ?"

बिल्ली ने अपने दाहिने पंजे से इशारा करते हुए कहा, "उस तरफ एक हैट बनानेवाला रहता है और दूसरी तरफ एक बैसाखी खरगोश रहता है। तुम्हारी मर्ज़ी आए जिसके पास जाओ। लेकिन हैं वे दोनों पागल !"

"लेकिन मैं पागलों के बीच नहीं जाना चाहती।"

बिल्ली बोली, "ओह, लेकिन और कोई चारा ही नहीं है। यहां हम सब लोग पागल हैं। मैं पागल हूं, तुम पागल हो।"

"तुम्हें कैसे पता कि मैं पागल हूं ?" एलिस ने पूछा।

"तुम ज़रूर पागल हो, वरना यहां आतीं ही नहीं। अच्छा, क्या आज तुम बेगम के यहां खेलने जा रही हो ?"

"हां, मैं जाना तो बहुत चाहती हूं, लेकिन मुझे निमन्त्रण नहीं मिला है।"

"अच्छा, मैं तुमसे वहां मिलूंगी।" यह कहकर बिल्ली गायब हो गई।

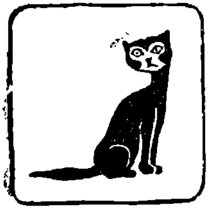
एलिस को इसपर कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि यहां रहते हुए अब वह इस तरह की आश्चर्यजनक घटनाओं की आदी हो गई थी। लेकिन अचानक फिर से बिल्ली ने प्रकट होकर पूछा, "अच्छा, तो यह बताओ, उस बच्चे का क्या हुआ ? मैं तो पूछना ही भूल गई थी।"

"वह सुअर बन गया।" एलिस ने बहुत शान्ति से जवाब दिया, जैसे वह कोई ताज्जुब की बात न हो।

"हां, यही मैं भी सोचती थी।" यह कहकर बिल्ली फिर से गायब हो गई।

एलिस भी अपने रास्ते बढ़ चली। चलते-चलते वह एक छोटे-

से मकान के पास पहुंची, जो उसे बैसाखी खरगोश के मकान जैसा लगा। उसकी चिमनियां खरगोश के कान की शक्ल की बनी थीं और छत पर रोएं पड़े थे। यह मकान इतना बड़ा था कि उसके पास जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। इसलिए उसने अपने बायें हाथवाला कुकुरमुत्ते का टुकड़ा चबाया और अपनी लम्बाई दो फुट कर ली। फिर भी उसे मकान के पास जाते हुए डर लग रहा था—पागलों के बीच जाते किसे डर नहीं लगता! उसने सोचा, शायद वहां सभी लोग पागल होंगे।



7

मकान के सामने पेड़ के नीचे एक टेबल सजाकर रखी गई थी। बैसाखी खरगोश हैट बनानेवाले के साथ बैठा चाय पी रहा था। उनके बीच एक मोटा चूहा बैठा था, जो गहरी नींद में सो रहा था और जिसे दोनों तकिये की तरह इस्तेमाल कर रहे थे। दोनों ने चूहे पर अपनी कोहनी टिका रखी थी और आराम से बातें कर रहे थे। एलिस ने सोचा कि बेचारे चूहे को बड़ी तकलीफ हो रही होगी।

टेबल बहुत बड़ी थी, लेकिन फिर भी वे तीनों एक कोने में बहुत सिकुड़कर बैठे हुए थे। एलिस को आते देखकर वे दोनों चिल्लाए, "जगह नहीं हैं! यहां जगह नहीं है।"

एलिस ने डांटते हुए कहा, "बहुत जगह है!" और यह कह कर वह दूसरी तरफ एक बड़ी-सी कुर्सी पर जा बैठी।



"लो शराब पियो।" बैसाखी खरगोश ने कहा।

एलिस ने टेबल पर चारों ओर नज़र दौड़ाई, लेकिन वहां चाय के सिवा और कुछ था ही नहीं। वह बोली, "यहां कहीं शराब तो नज़र ही नहीं आ रही है।"

"हां, शराब नहीं है।" खरगोश बोला।

"तब यह तो कोई शिष्टता की बात नहीं हुई कि जो चीज़

तुम्हारे पास नहीं है, उसे तुम किसीको लेने का न्यौता दो !" एलिस ने गुस्से में कहा।

"और यह भी कोई शिष्टता की बात नहीं है कि बिना बुलाए ही तुम आकर यहां बैठ जाओ।" खरगोश बोला।

"मैं नहीं जानती थी कि यह तुम्हारी टेबल है। इसपर तो और भी आदमियों के बैठने की जगह है।"

इसके बाद वे लोग अजीब तरह से इधर-उधर की ऊट-पटांग बातें करने लगे। एलिस को लगा कि वे पहेलियां बुझा रहे हैं। वह अचानक बोल पड़ी, "मैं जानती हूं, तुम्हारा क्या मतलब है।"

'क्या तुम इसका जवाब दे सकती हो ?" खरगोश बोला।

"बिलकुल !"

"तब फिर तुम्हें वही करना चाहिए जो तुम चाहती हो।"

"यही तो मैं करती हूं—कम से कम जो मैं चाहती हूं वही मैं चाहती हूं। और जो चाहती हूं वही करती हूं—यह एक ही बात है।"

"नहीं, एक बिलकुल नहीं है। क्योंकि इसका तो मतलब यह हुआ कि तुम यह भी कह सकती हो कि 'जो मैं देखती हूं, वही खाती हूं' का मतलब यही है कि 'जो मैं खाती हूं वही देखती भी हूं' !" हैटवाला बीच में बोला।

खरगोश ने कहा, "हां और क्या ! फिर तुम यह भी कहोगी कि 'जो कुछ मुझे मिलता है उसे मैं पसंद करती हूं' का मतलब यही है कि 'जो मैं पसन्द करती हूं, वही मुझे मिलता है' !"

"हां, तुम यह कह सकते हो !" वह मोटा चूहा बीच में ही बोला। उसकी आवाज़ ऐसी लग रही थी जैसे कोई नींद में बोले, "जब मैं सोता हूं, तो सांस लेता हूं, और जब सांस लेता हूं तो मैं सोता हूं—दोनों का एक ही मतलब है !"

इसपर हैटवाले ने चिढ़कर कहा "हां, तुम्हारे लिए दोनों का मतलब एक ही है !"

इसके बाद बातचीत थोड़ी देर के लिए बन्द हो गई। सब लोग अपने-अपने विचारों में खो गए। थोड़ी देर बाद हैटवाला बोला, "चूहा फिर सो गया !" यह कहकर उसने थोड़ी-सी गरम चाय उसकी नाक पर गिरा दी। चूहा कुनमुनाया और फिर सो गया।

फिर हैटवाले ने एलिस को बताया कि यहां हमेशा चाय चलती रहती है और हम लोग चाय पीते रहते हैं। एलिस को बड़ा ताज्जुब हुआ। इतने में खरगोश जम्हाई लेते हुए बोला, "भाई, हम लोगों को बातचीत का विषय बदल देना चाहिए। मेरा जी ऊब रहा है। मेरी राय है कि इस लड़की को चाहिए कि यह हमें एक कहानी सुनाए।"

"लेकिन···लेकिन मुझे कोई कहानी नहीं आती।" एलिस ने घबराकर कहा।

"तब चूहा सुनाएगा !" दोनों एक साथ चीखे। फिर दोनों चिकोटी काट-काटकर चूहे को जगाने लगे, "उठो ! उठो !"

चूहे ने धीरे से आंखें खोलीं और भारी आवाज़ में कहा, "मैं सब सुन रहा था, तुम लोग जो कह रहे थे, मैं सब सुन रहा था !"

"कहानी सुनाओ !" बैसाखी खरगोश बोला।

चूहे ने बहुत तेज़ी से सुनाना शुरू किया, "एक समय की बात है, तीन छोटी बहनें थीं। उनके नाम थे--एलसी, लेसी और टिली। वे लोग कुएं के पेंदे में रहती थीं।"

"और वे खाती क्या थीं ?" एलिस ने बीच में ही पूछा, क्योंकि खाने-पीने के मामले में उसे बड़ी रुचि थी।

चूहा दो-तीन मिनट तक सोचता रहा और फिर एकदम से बोला, "वे लोग गुड़ खाती थीं !"

एलिस बोली, "नहीं, यह नहीं हो सकता, वरना वे बीमार हो जातीं !"

चूहा बोला, "वह तो वे थीं ही, बहुत बीमार थीं वे।"

गुड़ खाकर ज़िंदा रहने की बात एलिस को कुछ अजीब-सी लगी। फिर उसने पूछा, "लेकिन कुएं में क्यों रहती थीं ?"

लेकिन बीच में ही उसे खरगोश ने टोक दिया और चाय पीने को कहा। एलिस ने चाय पी, मक्खन और रोटी खाई, फिर अपना सवाल दुहराया, "लेकिन वे कुएं में क्यों रहती थीं ?"

चूहा दो-एक मिनट तक सोचता रहा, फिर बोला, "वह गुड़ का कुआं था।"

"यह सब गप्प है, गुड़ का कुआं ही नहीं होता।" एलिस बोली। लेकिन हैटवाले और ख़रगोश ने उसे चुप करा दिया।

चूहे ने चिढ़कर कहा, "अगर तुम शराफत से सुन नहीं सकतीं तो अच्छा है बाकी कहानी तुम्हीं पूरी कर लो।"

जब एलिस ने उसे विश्वास दिलाया कि अब वह उसे नहीं टोकेगी तो वह आगे बढ़ा, "और ये तीनों छोटी बहनें—सुना न, खींचना सीख रही थीं..."

"क्या खींचना ?"

"गुड़, और क्या !" चूहा बोला।

इतने में हैटवाला बोला, "मुझे एक साफ प्याला चाहिए। ज़रा सब कोई एक-एक सीट आगे बढ़ जाओ।"

यह कहकर वह उठकर एक सीट आगे बढ़ गया। चूहा उसकी जगह बैठा और चूहे की जगह खरगोश ने ली। एलिस का मन तो नहीं था लेकिन उसे खरगोश वाली जगह पर बैठना पड़ा। इससे फायदा सिर्फ हैटवाले को हुआ, क्योंकि वह नई सीट पर जा बैठा था, जहां एक साफ प्याला रखा था। एलिस को तो नुकसान ही हुआ, क्योंकि खरगोश ने अपनी तश्तरी में दूध का बर्तन उलट रखा था। एलिस अब फिर चूहे को नाराज़ नहीं करना चाहती थी, इसलिए बहुत सहमते हुए बोली, "लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आता कि वे गुड़ खींचती कहां से थीं ? वे तो कुएं में रहती थीं।"

चूहा बोला, "और क्या, कुएं में तो रहती ही थीं, और गुड़

खींचना सीखती थीं।" फिर एक जम्हाई लेकर और आंखें मलते हुए वह उनींदी आवाज़ में बोला, "वे और भी कई तरह की चीज़ें खींचती थीं—ऐसी सभी चीज़ें जिनका नाम 'म' से शुरू होता था···"

"क्यों, 'मां' से ही क्यों नहीं ?" एलिस ने पूछा।

"और 'म' से ही क्यों नहीं ?" खरगोश बोला।

एलिस बेचारी चुप रह गई। तब तक चूहा आंखें बन्द करके ऊंघने लगा। लेकिन हैटवाले ने चिकोटी काटकर उसे जगा दिया। वह एक हल्की-सी चीख मारकर फिर से कहानी सुनाने लगा। लेकिन उसकी बातें कुछ इतनी ऊटपटांग थीं कि एलिस का जी ऊबने लगा। वह उठकर वहां से चल दी। चूहा भी अब ऊबने लगा था। किसी ने एलिस को जाने से रोका नहीं।

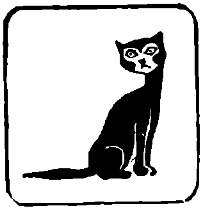
जाते-जाते उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। खरगोश और हैटवाले ने मिलकर चूहे की गर्दन केतली में डाल दी थी। उसे यह देखकर हंसी भी आई और बेचारे चूहे पर दया भी आई। लेकिन उसने मन में कहा :

"जो भी हो, अब मैं फिर वहां नहीं जाऊंगी। आज तक मैंने ऐसी चाय-पार्टी नहीं देखी !" वह जंगल की ओर चली जा रही थी।

अचानक उसकी नज़र एक ऐसे पेड़ पर पड़ी, जिसके तने में अन्दर जाने के लिए दरवाज़ा बना हुआ था। एलिस को यह बहुत आश्चर्यजनक तो लगा लेकिन वह उसके अन्दर घुस गई। और दूसरे ही क्षण उसने अपने को उस बड़े-से कमरे में पाया, जहां शीशे की टेबल रखी हुई थी।

इस बार आसानी से उसने वह छोटी-सी सुनहरी चाबी उठा ली। फिर दरवाज़े का ताला खोलकर वह बाग में जाने की कोशिश करने लगी। लेकिन उसकी लम्बाई अब भी कुछ अधिक थी। इसलिए पहले उसने कुकुरमुत्ते का टुकड़ा खाकर अपनी लम्बाई एक फुट बनाई। फिर वह आसानी से दरवाज़े में से

निकलकर उस खूबसूरत बाग में जा पहुंची, जहां अच्छे-अच्छे फूल खिले थे और फव्वारे चल रहे थे ।



8

बाग में घुसते ही उसे एक बड़ा-सा गुलाब का पेड़ मिला, जिसपर सफेद गुलाब खिले हुए थे । वहां तीन छोटे-छोटे माली खड़े थे । वे अपने हाथों में ब्रुश लेकर एक-एक फूल को गुलाबी रंग में रंग रहे थे । एलिस को देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ । वह और पास जाकर गुलाब के फूलों की रंगाई का काम देखने लगी । इतने में उसने एक माली को कहते हुए सुना, "देख रे पंजे, इस तरह मुझपर रंग मत गिरा ।"

पंजा मनहूस आवाज़ में बोला, "मैं क्या करूं, इसमें मेरा कोई कसूर नहीं, सत्ते ने मेरी कुहनी हिला दी ।"

इसपर सत्ता गर्दन उठाकर बोला, "बिलकुल ठीक ! पंजे, हमेशा दूसरों का दोष निकालना चाहिए, याद कर लो यह बात !"

"देखो, तुम बोलो मत । कल ही बेगम साहिबा कह रही थीं कि तुम्हारा सिर उड़ा देना चाहिए ।"

"किसलिए ?" पहला माली बोला ।

"इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं है, समझे न दुग्गे ?" सत्ता बोला ।

वे लोग इस तरह आपस में झगड़ रहे थे कि एलिस ने कुछ डरते हुए पूछा, "क्यों भाई, ज़रा मुझे यह तो बताओ कि तुम



लोग इन गुलाब के फूलों को रंग क्यों रहे हो ?"

पंजे और सत्ते ने कुछ नहीं कहा और दुग्गे की ओर देखना शुरू किया। दुग्गा दबी हुई आवाज़ में बोला, "बात यह है कुमारी जी, कि यहां पर लाल फूलों वाला गुलाब का पेड़ होना चाहिए था। और हम लोगों ने गलती से यहां पर सफेद गुलाब का झाड़ लगा दिया। अब अगर बेगम साहब को मालूम हो गया

तो वे हम सबका सिर उड़वा देंगी। इसलिए बेगम साहब के आने के पहले हम इसके फूलों को रंग देना चाहते हैं।" लेकिन इसी बीच पंजा चिल्लाया, "बेगम ! बेगम साहब आ गईं !" इस पर तीनों माली फौरन मुंह के बल ज़मीन पर लेट गए। एलिस को कदमों की आहट सुनाई दी। वह मुड़कर उत्सुकता से बेगम की ओर देखने लगी।

आगे-आगे दस सिपाही चल रहे थे, जिनकी शक्लें मालियों की तरह ही ताश के पत्तों जैसी थीं। उनके बाद दस दरबारी चल रहे थे। इनके कपड़ों पर ताश की ईंट के निशान बने हुए थे। इसके बाद शाही घराने के बच्चे चल रहे थे, जिनकी गिनती बत्तीस थी। इनके कपड़ों पर ताश के पान के चिह्न बने हुए थे। इसके बाद मेहमान चल रहे थे, जिनमें से ज़्यादातर बादशाह और बेगमें थीं। इन्हीं लोगों के बीच एलिस ने देखा कि वह सफेद खरगोश भी था, जो बहुत घबराया हुआ-सा जल्दी-जल्दी लोगों से बातें कर रहा था। उसने एलिस को देखा ही नहीं। इसके बाद बादशाह के दो सिपाही चल रहे थे जो एक खूबसूरत-से रेशमी तकिये पर बादशाह का ताज उठाए हुए थे। पूरे जुलूस के बाद पान के बादशाह और बेगम की सवारी थी।

जब जुलूस एलिस के पास से गुज़रा तो सब लोग खड़े हो गए और उसकी ओर देखने लगे। बेगम ने डांटते हुए पूछा, "यह कौन है ?" इसपर पान के गुलाम ने मुस्कराकर अपना सिर झुका लिया।

"बेवकूफ !" बेगम ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "लड़की, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"हुज़ूर, मेरा नाम एलिस है।" एलिस ने बहुत ही अदब के साथ कहा, और फिर अपने मन में बोली—इन लोगों से डरने की क्या ज़रूरत है, आखिर ये सब हैं तो ताश के पत्ते ही। मुझे इनसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं।

"और ये कौन लोग हैं ?" बेगम ने उन तीनों मालियों की

ओर इशारा करते हुए पूछा, जो गुलाब के पेड़ के नीचे मुंह छिपाए औंधे पड़े थे। उन सबकी पीठें एक जैसी ही थीं। इसलिए बेगम यह नहीं समझ पा रही थी कि ये माली हैं या सिपाही, दरबारियों में से कोई हैं या उसके अपने ही बच्चे हैं। उसने फिर पूछा, "ये लोग कौन हैं ?"

"मैं क्या जानूं ? यह मेरा काम नहीं है।" एलिस ने साहस बटोरकर कहा।

यह सुनकर बेगम का मुंह तमतमा आया। पहले तो उसने कुछ देर तक आंख फाड़कर एलिस को देखा और फिर हुकुम सुना दिया, "ले जाओ इस लड़की को ! इसका सिर उतार लो।"

"यह सब बकवास है।" एलिस ने ज़रा ज़ोर से और गम्भीरता से कहा।

इसपर बेगम चुप रह गई। लेकिन बादशाह ने बेगम का हाथ थपथपाते हुए कहा, "ज़रा सोचो तो सही, मेरी मलिका ! यह तो एक मामूली लड़की है !" बेगम को गुस्सा आ गया। उसने अपने गुलाम को हुकुम दिया, "इन लोगों को उलट दो।" और गुलाम ने अपने एक पैर से उन तीनों पत्तों को उलट दिया।

बेगम अपनी महीन लेकिन तेज़ आवाज़ में चीखी, "खड़े हो जाओ !" फौरन तीनों माली खड़े हो गए और बादशाह, बेगम और शाही घराने के बच्चों वगैरह को झुक-झुककर सलाम करने लगे।

"बन्द करो यह सब !" बेगम ने चीखकर कहा, "मुझे तो तुम्हारी बातों से चक्कर आने लगा !" फिर वह गुलाब के उस बड़े से पेड़ के पास पहुंची और कहने लगी, "तुम लोग यहां क्या कर रहे हो ?" फिर कुछ देर सोचकर वह खुद ही बोली, "ओह, समझी ! इन दोनों का सिर फौरन उतार लिया जाए।" और इसके बाद बेगम आगे बढ़ गई। सिर्फ तीन सिपाही मालियों का सिर काटने के लिए पीछे रह गए। माली दौड़ते हुए जान बचाकर एलिस के पास आ खड़े हुए।

एलिस ने उन्हें एक बड़े-से गमले में रख दिया। वे तीनों सिपाही थोड़ी देर तक उन्हें इधर-उधर खोजते रहे और फिर चुपचाप वापस लौट गए। बेगम ने डांटते हुए पूछा, "क्यों, उनका सिर उतार लिया गया ?"

सिपाहियों ने भी उसी तरह चीखकर जवाब दिया, "जी हुज़ूर, उनका सिर···"

इसी बीच बेगम ने चीखकर कहा, "ठीक है ! अच्छा, क्या तुम खेल सकती हो ?" सब लोग एलिस की ओर देखने लगे। ज़ाहिर था कि यह सवाल एलिस से किया गया था।

उसने भी चीखकर जवाब दिया, "जी हां !"

बेगम ने जैसे ज़ोरों से दहाड़ते हुए कहा, "तो आओ फिर !" एलिस भी इन लोगों के साथ हो ली। सफेद खरगोश उसके साथ साथ चल रहा था। वह बोला, "आज का दिन बड़ा सुहावना है !"

"हां, बहुत सुहावना है। लेकिन डचेज़ कहां है ?" एलिस ने पूछा।

"हश्-हश्-हश् !"

खरगोश ने घबराकर लेकिन दबी हुई आवाज़ में कहा। फिर आसपास देखकर वह धीरे से उसके कान में बोला, "उसका नाम न लो, उसे फांसी की सज़ा सुना दी गई है।"

"क्यों ?"

"क्यों ! तुम्हें मालूम नहीं ? उसने बेगम के कान खींच लिए थे···" खरगोश बोला। यह सुनकर एलिस अपनी हंसी नहीं रोक पाई। खरगोश ने उसे रोकते हुए कहा, "ओह, हश् ! अगर कहीं बेगम ने सुन लिया तो ?"

"सब लोग अपनी-अपनी जगह खड़े हो जाओ।" बेगम ने गरजती हुई आवाज़ में कहा।

सब लोग गिरते-पड़ते इधर-उधर भागने लगे। किसी तरह सब अपनी-अपनी जगह खड़े हो गए। फिर खेल शुरू हुआ। लेकिन एलिस ने आज तक कभी ऐसा खेल नहीं देखा था। गेंद-बल्ले

सब ज़िन्दा जानवरों के बनाए गए थे। यहां तक कि गेंद के निकालने के लिए ज़मीन पर जो छोटे-छोटे दरवाज़े बनाए जाते हैं उन की जगह सिपाही ज़मीन पर हाथ-पैर टेककर खड़े थे। 'फ्लेमिंगो' नाम की चिड़िया, जिसकी गर्दन लम्बी-सी और चोंच काफी चौड़ी होती है तथा टांगें लम्बी-लम्बी होती हैं, बल्ले का काम दे रही थी।

लेकिन एलिस को इससे बड़ी दिक्कत हो रही थी। उसने उसे अपनी बगल में दबा लिया और उसकी गर्दन से एक जंगली चूहे पर चोट करने की कोशिश की, जिसका इस्तेमाल गेंद की तरह किया जा रहा था। लेकिन चिड़िया गर्दन घुमाकर एलिस की ओर देखने लगी। जब किसी तरह उसने उस की गर्दन नीचे की तो चूहा अपने-आप लुढ़कता हुआ आगे बढ़ गया। इसके अलावा जो सिपाही ज़मीन पर दरवाज़े बने खड़े थे, वे भी मनमाने ढंग से उठ जाते थे और कहीं दूसरी जगह जाकर हाथ-पैर टेककर खड़े हो जाते थे। थोड़ी ही देर में एलिस को लगा कि यह खेल बड़ा मुश्किल है।

इस खेल में किसी तरह के नियम नहीं पाले जा रहे थे। सब लोग अपने मनमाने ढंग से खेल रहे थे। कोई किसी के लिए रुकता नहीं था। सब आपस में झगड़ पड़ते थे, और एक-साथ कई आदमी मिलकर चूहे पर चोट करने के लिए तैयार हो जाते थे। खेलते-खेलते बेगम को थोड़ी ही देर में इतना गुस्सा आया कि वह हर किसी को फांसी की सज़ा सुनाने लगी।

एलिस कुछ घबराने लगी। अभी तक खेल में बेगम से उसका झगड़ा नहीं हुआ था। लेकिन वह जानती थी कि किसी भी क्षण बेगम नाराज़ हो सकती है। और फिर उसका क्या होगा? उसका भी सिर उतार लिया जाएगा।

वहां से वह भागने का रास्ता ढूंढ़ने लगी। लेकिन वह जानती थी कि यहां से लोगों की नज़र बचाकर भागना संभव नहीं है। अचानक उसे हवा में किसी की शक्ल साफ होती हुई दिखाई

दी। वह गौर से देखने लगी। थोड़ी ही देर में उसे उस बिल्ली का चेहरा दिखाई दिया। यह देख उसकी जान में जान आई। बिल्ली ने पूछा, "कहो, क्या हाल है?"

लेकिन जवाब देने से पहले एलिस कुछ असमंजस में पड़ गई। उसे बिल्ली का सिर्फ मुंह और आंखें ही दिखाई दे रही थीं। कान नज़र नहीं आ रहे थे। उसे लगा कि यह सुनेगी कैसे? लेकिन जब उसने बिल्ली को मुस्कराते हुए देखा तो जवाब दिया, "पता नहीं ये लोग कैसे खेलते हैं! सब कोई बेईमानी करते हैं, और आपस में इस कदर झगड़ते हैं कि कोई किसी की बात ही नहीं सुनता! इनके लिए खेल का कोई नियम ही नहीं।"

"तुम्हें बेगम पसन्द आई?" बिल्ली ने धीरे से पूछा।

"बिलकुल नहीं, वह तो एकदम···" लेकिन तभी उसने देखा कि बेगम उसके पास आ खड़ी हुई थी और उसकी बातें सुन रही थी। इसलिए उसने बात बदलकर कहा, "वे तो खूब खेलती हैं! इस खेल में वे ज़रूर जीतेंगी। बेगम साहब जैसा खिलाड़ी मैंने कभी देखा नहीं!"

बेगम यह सुनकर मुस्कराई और आगे बढ़ गई!

"तुम किससे बातें कर रही हो?" बादशाह ने एलिस के पास आते ही पूछा। वह बहुत आश्चर्य से हवा में बिल्ली के सिर की ओर देख रहा था।

"यह मेरी एक दोस्त है—यह चेशायर की बिल्ली है। हुज़ूर के सामने मैं इसे हाज़िर करना चाहती हूं।"

"लेकिन मैं तो इसे देखना तक नहीं चाहता। खैर, अगर यह चाहे तो मुझे सलाम कर सकती है।"

"मैं नहीं करूंगी!" बिल्ली बोली।

बादशाह को गुस्सा आ गया। बोला, "गुस्ताखी न करो!" फिर वह कांपता हुआ एलिस के पीछे आ खड़ा हुआ और बोला, "तुम इस तरह मुझे घूर क्यों रही हो? भाग जाओ यहां से!" फिर उसने बेगम को आवाज़ देकर कहा, "देखो, इस बिल्ली को



यहां से भगा दो, यह बड़ी खतरनाक मालूम देती है।"

बेगम के पास हर मर्ज़ की बस एक दवा थी। उसने फौरन हुकुम दिया, "इस बिल्ली का सिर उड़ा दो!"

"हां, ठीक हैं, मैं खुद जल्लाद को बुला लाता हूं!" बादशाह बोला। यह कहकर वह फौरन खिसक गया।

एलिस लौट आई और खेल में भाग लेने लगी। उसने देखा कि उसका चूहा एक दूसरे चूहे से लड़ रहा है। इस समय इन दोनों से एक-दूसरे को टकरा देना बिलकुल आसान था। लेकिन बिना बिल्ले के यह कैसे हो? एलिस की फ्लेमिंगो चिड़िया मैदान के दूसरे कोने में उड़ गई थी। जब एलिस उसे पकड़कर लाई तब तक दोनों चूहे गायब हो चुके थे। एलिस ने चिड़िया को कसकर अपनी बगल में दबा लिया ताकि वह अब फिर से भाग न सके।

फिर उसने सोचा, चलो, थोड़ी देर और बिल्ली से बात की जाए। लेकिन जव वह वहां पहुंची तो उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहां एक बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गई थी। बादशाह, बेगम और जल्लाद में किसी प्रश्न को लेकर ज़ोरों की वहस छिड़ी हुई थी। सब एक साथ बोल रहे थे। बाकी लोग घबराए और चुपचाप पास ही खड़े हुए थे।

जब एलिस वहां पहुंची, तो उन तीनों ने उससे फरियाद की और झगड़ा सुलझाने को कहा। तीनों एक साथ अपनी-अपनी बातें कहने लगे। एलिस कुछ समझ ही नहीं पाई कि कौन क्या कह रहा है।

बड़ी मुश्किल से उसने जल्लाद की बात सुनी। उसका कहना था कि जब तक किसी का पूरा शरीर नहीं दिखाई दे तब तक उसका सिर नहीं काटा जा सकता। बिल्ली का धड़ तो दिखाई ही नहीं दे रहा है। वह उसका सिर कैसे काटे! आज तक कभी उसने ऐसा काम नहीं किया था।

बादशाह का कहना था कि जल्लाद बेकार की बकवास कर

रहा है। अरे भाई, जिस चीज़ का सिर दिखाई देता है, उसका सिर काटा जा सकता है।

बेगम का कहना था कि अगर इस मामले को फौरन नहीं निपटाया जाता तो वह सब लोगों के सिर उड़वा देगी। उसकी यह बात सुनकर सब लोग बुरी तरह घबरा रहे थे।

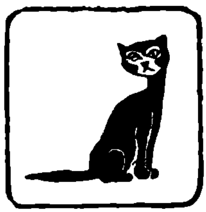
एलिस की समझ में नहीं आया कि क्या फैसला करे। अन्त में वह बोली, "यह बिल्ली डचेज़ की है, अच्छा हो कि आप लोग उन्हींसे पूछ लें।"

"वह तो कैदखाने में बन्द है!" बेगम बोली और फिर उसने जल्लाद को हुक्म दिया, "जाओ उसे फौरन हमारे सामने पेश करो!"

और जल्लाद तीर की तरह भागता हुआ वहां से चला गया।

उसके जाते ही बिल्ली का चेहरा गायब होने लगा और जब तक जल्लाद डचेज़ को लेकर लौटा, तब तक बिल्ली कहीं दिखाई नहीं दी। बादशाह और जल्लाद ने उसे इधर-उधर खोजना शुरू किया। बाकी सब लोग फिर से खेलने लगे।

9



डचेज़ ने आते ही एलिस की बांह में बांह डाली और बहुत प्यार से कहा, "अरे बिटिया, तुम खूब मिलीं। कितनी खुशी हो रही है मुझे तुमसे मिलकर!"

दोनों बाग में टहलने लगीं। एलिस यह देखकर खुश थी कि डचेज़ का मिज़ाज इस समय अच्छा था। वह रसोईघर वाली

घटना अभी तक भूली नहीं थी। उसे वह बावर्चिन याद आई जो मिर्च बिखेर रही थी। एलिस ने अपने मन में कहा, "अगर कोई मुझे डचेज़ बना दे तो मैं कभी भी अपने रसोईघर में मिर्च न रखूं। मिर्च से आदमी क्रोधी और चिड़चिड़ा हो जाता है। मैं तो किसी भी तरह का मसाला घर में नहीं रखूंगी। बस दूध-दही और मिठाई। इन्हें खाने से आदमी मीठे स्वभाव का बनता है। पता नहीं लोग इस बात को भूल क्यों जाते हैं।"

वह इसी तरह अपने मन में सोचती रही, यहां तक कि वह यह भूल गई कि डचेज़ उसके साथ चल रही है। वह कुछ चौंक पड़ी, जब डचेज़ ने कहा, "बेटी, तुम कुछ सोच रही हो ? शायद किसी भली सीख के बारे में सोच रही होगी। हां, हर चीज़ से हमें सीख मिल सकती है !" यह कहते-कहते उसने एलिस के कान के पास ही ज़ोर से छींक दिया।

एलिस को यह बहुत भद्दा लगा। वह नहीं चाहती थी कि डचेज़ इस तरह उससे सटकर चले, क्योंकि एक तो डचेज़ बहुत बदसूरत थी, और दूसरे उसकी लम्बाई ठीक इतनी थी कि वह आसानी से अपनी ठुड्डी एलिस के कंधे पर टेक सके। बार-बार वह उसके कन्धे पर ठुड्डी टेक देती थी। एलिस को बड़ी तकलीफ होती थी, क्योंकि ठुड्डी नुकीली थी।

थोड़ी ही देर की बातचीत से एलिस को लगा, डचेज़ को हर चीज़ में कोई न कोई सीख खोजने का बड़ा शौक है। अचानक डचेज़ बोली, "शायद तुम्हें यह सोचकर आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं तुम्हारी गर्दन में बांह डालकर क्यों नहीं चलती, है न ? लेकिन बात यह है कि मुझे तुम्हारी इस फ्लेमिंगो चिड़िया से डर लगता है..."

लेकिन एलिस को उल्टे यह आश्चर्य हो रहा था कि वह इस तरह इससे सटकर क्यों चल रही थी। अब वह उसकी गर्दन में बांह डालने को उतारू थी। एलिस ने उसे टालने के लिए कहा, "हां, यह काट लेती है।"

"ओह, हां, 'फ्लेमिंगो' और 'सरसों' दोनों काटती हैं," डचेज़ बोली, "और इससे यह सीख मिलती है कि एक रंग की चिड़ियां एक जैसी ही होती हैं!"

"लेकिन सरसों तो कोई चिड़िया होती नहीं," एलिस बोली "यह तो शायद, मेरा जहां तक ख्याल है, धातु होती है।"

"अरे हां, सरसों धातु ही तो होती है," डचेज़ बोली, "यहां पास ही सरसों की एक बहुत बड़ी खदान है और इससे हमें यह सीख मिलती है कि जितनी गहरी खदान, उतनी ही ऊंची उड़ान।"

उसकी यह ऊटपटांग बात एलिस की समझ में नहीं आई। वह सोचने लगी कि कहीं इसका दिमाग तो खराब नहीं है। थोड़ी देर बाद डचेज़ ने फिर उसके कन्धे पर अपनी ठुड्डी गड़ाते हुए कहा, "क्यों, फिर कुछ सोचने लगीं?"

एलिस ने चिढ़कर कहा, "क्यों, मुझे सोचने का हक है।"

"ओह, हां, क्यों नहीं! उसी तरह पूरा हक है, जिस तरह सूअर को उड़ने का हक होता है। इससे यह सीख मिलती है कि…"

और अचानक उसकी आवाज़ बैठ गई। यही नहीं, एलिस की बांह में लिपटी हुई उसकी बांह भी कांपने लगी। एलिस को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने ज्यों ही नज़र उठाई तो देखा कि सामने हाथ बांधकर बेगम खड़ी है, भौंहें सिकोड़े, गुस्से में कांपती हुई।

"सलाम हुज़ूर!" डचेज़ ने कांपती हुई आवाज़ में कहा।

"देखो सुन लो तुम…"बेगम ने गुस्से से ज़मीन पर पैर पटकते हुए चीखकर कहा "तुम्हें यह आखिरी मौका दिया जाता है। या तो तुम यहां न रहो, या फिर तुम्हारा सिर न रहे। जाती हो या सिर कटवाना चाहती हो—जल्दी सोच लो।"

डचेज़ ने वहां से चले जाना ही बेहतर समझा और फौरन चली गई।

बेगम ने एलिस से कहा, "चलो हम लोग खेलें।" एलिस

इतना डर गई थी कि उससे कुछ कहते न बना, वह चुपचाप खेल के मैदान में लौट आई।

वहां दूसरे मेहमान बेगम के चले जाने से मौका पाकर सुस्ताने लगे थे। बेगम को लौटते देखकर वे फौरन अपनी-अपनी जगह खड़े हो गए और खेलने लगे। लेकिन बेगम उन्हें डांटने से नहीं चूकी, "अगर फिर कोई बैठा तो उसकी खैर नहीं।"

जितनी देर तक खेल चलता रहा, बेगम किसी न किसी से झगड़ती ही रही। बार-बार वह चीखती थी, "इसका सिर काट लो!" या "इसकी गर्दन काट लो!" जिन लोगों को सज़ा सुनाई जाती थी, उन्हें सिपाही फौरन पकड़ लेते थे। ज़मीन पर फाटक बनकर खड़े रहनेवाले सिपाहियों की कमी पड़ने लगी। यहां तक कि अन्त में एक-एक करके सभी मेहमान गिरफ्तार कर लिए गए और सभी सिपाही कैदियों पर पहरा देने लगे। खेल के मैदान में बादशाह, बेगम और एलिस को छोड़कर और कोई बचा ही नहीं। बाकी सबको फांसी की सज़ा सुना दी गई थी।

अन्त में बुरी तरह थककर बेगम ने भी खेलना बन्द कर दिया और एलिस से पूछा, "क्यों जी, तुमने नक्काल कछुए को देखा है?"

"नहीं," एलिस बोली, "मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि नक्काल कछुआ होता क्या है?"

"तो आओ, तुम्हें उससे मिला दूं। वह तुम्हें अपनी कहानी सुनाएगा।"

एलिस उसके साथ चल पड़ी। पीछे से उसने सुना, बादशाह बहुत धीमी आवाज़ में वहां खड़े हुए लोगों से कह रहा था, "चलो, तुम सब लोगों को माफ किया जाता है!" यह सुनकर एलिस को कुछ राहत मिली। वह यह सोचकर घबरा रही थी कि आज कितने सारे लोगों को फांसी होगी।

थोड़ी देर में उन्हें एक ग्रिफन (ग्रिफन एक तरह का काल्पनिक प्राणी है, जिसकी गर्दन और पंख गरुड़ की तरह होते हैं और पीछे

के पैर तथा पूंछ शेर की तरह होती है) मिला। ग्रिफन धूप में लेटा हुआ ऊंघ रहा था। "अरे ओ आलसी ! उठ ! जा, इन देवीजी को नक्काल कछुए को दिखाने और उसकी कहानी सुनाने ले जा ! मुझे ज़रा कुछ लोगों को फांसी दिलवानी है।" यह कहकर बेगम वहां से चली गई।

एलिस उस अजीब से जानवर के पास अकेली खड़ी रह गई। ग्रिफन जम्हाई लेता हुआ उठा और अपनी आंखें मलने लगा। जब तक बेगम आंख से ओझल नहीं हो गई, वह उसे देखता रहा। फिर हंसकर बोला—"हंह, क्या मज़ाक है !"

एलिस ने पूछा, "क्यों, कैसा मज़ाक ?"

"अरे, वही ! वह खुद मज़ाक है।" ग्रिफन बोला, "वह भ्रम में रहती है। अब देखो न, वह समझती है कि लोगों को फांसी होगी। लेकिन असल में आज तक किसीको सिपाहियों ने फांसी पर चढ़ाया ही नहीं। सब उसे बहका देते हैं। खैर, आओ चलें।"

थोड़ ही दूर जाने पर उन्हें नक्काल कछूआ एक छोटी-सी चट्टान पर बैठा दिखाई दिया। वह अकेला और दुःखी-सा बैठा था। पास जाने पर एलिस ने सुना कि वह आहें भर रहा था। एलिस को उसपर दया आ गई। उसने ग्रिफन से पूछा, "इसे क्या तकलीफ है ?"

ग्रिफन ने पहले की तरह ही जवाब दिया, "हंह, सब मज़ाक है। यह भ्रम में रहता है। इसे कोई तकलीफ नहीं है। आओ, चली आओ।"

वे दोनों नक्काल कछुए के पास पहुंचे। कछुए ने आंसुओं से भरी अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से उनकी ओर देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा।

ग्रिफन बोला, "ये एक देवीजी हैं। ये तुम्हारी कहानी सुनना चाहती हैं, समझे ?"

"हां, मैं सुनाऊंगा।" वह अजीब-सी खोखली आवाज़ में बोला, "बैठ जाओ, तुम दोनों बैठ जाओ। यों खड़े मत रहो।



और जब तक मैं कहानी खत्म न कर लूं, बीच में एक शब्द न बोलना।"

वे दोनों बैठ गए। बहुत देर तक कोई बोला ही नहीं। एलिस ऊबने लगी। इतने में कछुए ने एक आह भरकर कहना शुरू किया, "एक समय की बात है, एक सचमुच का कछुआ था।" इसके बाद फिर एक लंबी चुप्पी। इतनी देर तक सिर्फ ग्रिफन के

ज़ोर-ज़ोर से सांस लेने और कछुए के सिसकने की आवाज़ आती रही। एलिस ने सोचा कि उसे उसकी कहानी के लिए धन्यवाद देकर वहां से चल देना चाहिए। लेकिन वह यह सोचकर चुप बैठी रही कि शायद कोई अच्छी-सी कहानी हो।

अन्त में कछुआ फिर बोला, "जब हम लोग छोटे थे," इतना कहकर वह फिर सिसकने लगा। लेकिन अब उसका सिसकना कुछ कम हो गया था। उसने अपनी बात पूरी की, "तब···तब हम लोग समुद्र में अपने स्कूल में पढ़ने जाया करते थे। एक बूढ़ा कछुआ हमारा शिक्षक था। हम लोग उसे घड़ियाल कहा करते थे···"

"जब घड़ियाल नहीं था, तो तुम लोग उसे घड़ियाल क्यों कहते थे?" एलिस ने बीच में पूछा।

कछुए को गुस्सा आ गया। वह बोला, "बड़ी ठस दिमाग मालूम होती हो तुम! अरे, वह हमें पढ़ाता था, इसलिए हम उसे घड़ियाल कहते थे।"

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए, इतनी छोटी-सी बात तुम नहीं समझतीं!" ग्रिफन ने कहा। फिर वे दोनों एलिस की ओर इस तरह देखने लगे, जैसे उन्हें उसकी बुद्धि पर तरस आ रहा हो। एलिस ने मारे शर्म के सिर झुका लिया। अन्त में ग्रिफन बोला, "अच्छा खैर, इसे छोड़ो, आगे बढ़ो, वरना तुम दिन-भर इसी में लगा दोगे।"

कछुए ने अपनी कहानी शुरू की, "हां, तो हम लोग समुद्र में अपने स्कूल में जाते थे; हालांकि तुम्हें इस बात पर विश्वास नहीं है···"

एलिस ने उसे टोका, "मैंने यह कभी नहीं कहा।"

"तुमने कहा है।"

"अच्छा, अपनी ज़बान बन्द करो।" एलिस उसका कोई जवाब दे, इसके पहले ही ग्रिफन ने उसे रोक दिया।

"हम लोगों की पढ़ाई बड़ी अच्छी होती थी। हम लोग रोज़

स्कूल जाते थे…"

"तो इसमें कौन-सी बड़ी बात हुई ! मैं भी स्कूल जाती रही हूं।" एलिस बोली।

"हूं, और वहां क्या पढ़ती थीं ?"

"फ्रेंच भाषा और संगीत।"

"और धुलाई ?"

"बिलकुल नहीं।" एलिस ने नाराज़ होकर कहा।

"ओह, तब तुम्हारा स्कूल अच्छा नहीं था। हां, तो हम लोग अपने स्कूल में पढ़ना और लीपना सीखते थे। और कई तरह के गणित सीखते थे, जैसे जोश, बासी, गुझा, झाग और झिन्न।"

"वाह, यह जोश-बासी वगैरह क्या होता है ? ऐसा गणित तो मैंने कभी सुना नहीं।" एलिस ने कहा।

लेकिन ग्रिफन ने आश्चर्य से अपने पंजे फैलाते हुए कहा, "क्या इतना भी नहीं सुना ? बासी क्या होता है, जानती ही नहीं ? अच्छा, ताज़ा क्या होता है यह तो जानती ही होगी ?"

"हां, हां, क्यों नहीं ! जो हाल का बना होता है वह ताज़ा होता है।"

"तो बस, अगर तुम, बासी क्या होता है, यह नहीं जानती तो तुम मूर्ख हो।"

एलिस ने उससे झगड़ा करना ठीक नहीं समझा। वह चुप रही। फिर उसने कछुए से पूछा, "हां, और क्या-क्या पढ़ा है तुमने ?"

"आयं, हां और हास (इतिहास) था—प्राचीन और आधुनिक और गोल (भूगोल) था, और, और…"

"अच्छा, कितने घण्टे रोज़ तुम लोग पढ़ते थे ?"

"पहले दिन दस घण्टे। दूसरे दिन नौ घण्टे। तीसरे दिन आठ घण्टे…बस, इसी तरह…"

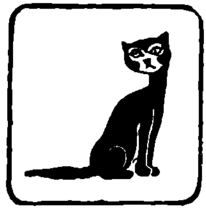
एलिस को पढ़ाई का यह ढंग बड़ा अजीब लगा। उसने पूछा, "तब तो ग्यारहवें दिन तुम लोगों की छुट्टी रहती होगी !"

"हां, हां और क्या !" कछुआ बोला ।

"और फिर बारहवें दिन क्या होता था ?"

"खैर, पढ़ाई के बारे में काफी बता दिया । अब इसे खेल के बारे में बताओ ।" ग्रिफन ने बीच में कहा ।

10



नक्काल कछुए ने एक गहरी आह भरी । फिर अपनी एक आंख बन्द कर ली । कुछ देर तक वह एलिस की ओर देखता रहा और बोलने की कोशिश करता रहा, लेकिन सिसकियों के मारे दो-एक मिनट तक उसका गला रुंधा रहा । अन्त में आंसू बहाते हुए बोला, "तुम तो समुद्र में कभी नहीं रही होगी और न शायद कभी किसी केकड़े से तुम्हारा परिचय कराया गया होगा··"

"नहीं, न मैं समुद्र में रही और न कभी किसी केकड़े से मिली ।" एलिस बोली ।

"इसलिए तुम नहीं समझ सकतीं कि 'केकड़ा-नाच' कैसा मज़ेदार होता है ।"

"कैसा होता है केकड़ा-नाच ?"

ग्रिफन बोला, "अरे भाई, पहले समुद्र के किनारे सब एक कतार बांधकर खड़े होते हैं···"

"नहीं, दो कतारों में !" कछुआ ज़ोर से चीखा, "इसके बाद हरएक एक-एक केकड़े को अपना साथी बना लेता है और उसके साथ नाचता है ।"

इसके बाद दोनों एलिस को नाच दिखाने लगे । थोड़ी देर

तक इधर-उधर उछल-कूद करने के बाद वे दोनों फिर से उदास होकर अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। उनकी यह उछल-कूद एलिस को कुछ खास अच्छी नहीं लगी। फिर भी उसने कहा, "लगता है, यह नाच बड़ा अच्छा होगा।"

"तो आओ, तुम्हें ज़रा कायदे से नाच दिखाएं।" कछुआ बोला। फिर दोनों एलिस के आस-पास खड़े हो गए और अजीब तरह से नाचने लगे। कछुआ एक गाना भी गाता जाता था, जिसका एलिस कोई मतलब न निकाल सकी।

नाच खत्म होने पर एलिस ने उन लोगों को धन्यवाद दिया। फिर उन लोगों के बीच बेकार की बातों पर बहस होने लगी। एलिस ने भी उसमें भाग लिया। अचानक ग्रिफन बोला, "अच्छा, अब तुम हमें कुछ अपनी बातें सुनाओ।"

"हां, मैं सुना तो सकती हूं, और बड़ी दिलचस्प बात है, लेकिन मैं कल की घटनाओं के बारे में कुछ बताना बेकार समझती हूं, क्योंकि कल मैं दूसरी ही थी, बिलकुल बदली हुई।"

"ज़रा अपनी बात समझाकर कहो।" कछुआ बोला।

"नहीं, नहीं, पहले अपनी कुछ दिलचस्प घटनाएं सुनाओ, समझाने-बुझाने में बहुत वक्त लगता है।" ग्रिफन उतावला होकर बोला।

एलिस उन लोगों को शुरू से अपने साथ होनेवाली घटनाओं के किस्से सुनाने लगी। उसने अपनी कहानी वहां से शुरू की, जब उसने पहली बार उस सफेद खरगोश को देखा था। पहले तो उसे कुछ घबराहट होने लगी, क्योंकि वे दोनों कहानी सुनने के लिए उसके बिलकुल करीब आ बैठे थे और बार-बार अपने बड़े-बड़े मुंह खोलकर जम्हाई लेते थे। उनकी बड़ी-बड़ी आंखों से एलिस को बड़ा डर लगता था। लेकिन धीरे-धीरे उसकी घबराहट कम होने लगी और वह बड़े मज़े से अपनी कहानी सुनाने लगी। वे लोग चुपचाप सुनते रहे। कुछ देर बाद नक्काल कछुआ एक लम्बी आह भरकर बोला, "ओह, कैसी अजीब बात है!"

"हां, सब कुछ बड़ा अजीब-सा मालूम होता है।" ग्रिफन बोला।

"अच्छा, ज़रा तुम कोई कविता तो सुनाओ। ज़रा इससे कहो कि कविता सुनाए।" नक्काल कछुए ने ग्रिफन की ओर देख कर इस तरह कहा जैसे उसका कहना एलिस टाल ही नहीं सकती।

और सचमुच ग्रिफन ने एलिस को आदेश देते हुए कहा, "खड़ी हो जाओ और कविता सुनाओ!"

एलिस को इस तरह जानवरों से हुकुम पाना कुछ अजीब-सा लगा। उसने सोचा कि इससे तो यही अच्छा होता कि मैं अपने स्कूल में होती। लेकिन उसे कविता तो सुनानी ही पड़ी। वह कविता तो सुना रही थी, पर उसके दिमाग में केकड़ा-नाच के दृश्य इस तरह उभरे हुए थे कि वह कविता को न मालूम किस तरह सुना गई।

कविता खत्म होने पर ग्रिफन बोला, "यह तुमने क्या सुनाया? मैं जब बच्चा था तो इस कविता को दूसरे ढंग से कहता था।"

"हां, मैंने भी इसे पहले इस तरह कभी नहीं सुना था।" कछुआ बोला, "इसमें तो बहुत-सी बेवकूफी की बातें मालूम होती हैं।"

एलिस कुछ नहीं बोली। वह बैठ गई और सोचने लगी कि आखिर बात क्या है! यहां सब कुछ इतना विचित्र क्यों होता है? मैं खुद किसी चीज़ को ठीक से नहीं कर पाती। इतने में कछुआ बोला, "मैं चाहता हूं कि यह इस कविता के माने भी समझा दे।"

"लेकिन इससे माने समझाते नहीं बनेगा। चलो जी, दूसरी कविता सुनाओ!" ग्रिफन बीच में ही बोला।

एलिस दूसरी कविता सुनाने लगी। उसकी आवाज़ कांप रही थी। वह जानती थी कि वह इस कविता को गलत ही सुना रही है। बहुत कोशिश करने पर भी उसे सही कविता की जगह गलत ही याद आती थी।

"लेकिन यह सब दोहराने से क्या फायदा !" नक्काल कछुआ बीच में ही बोला, "तुम माने तो समझातीं नहीं, और बस तोते की तरह दोहराती चली जाती हो। ऐसी ऊटपटांग कविता तो मैंने आज तक कभी नहीं सुनी थी।"

"हां, मैं भी सोचता हूं कि तुम यह सब बन्द कर दो।" ग्रिफन बोला। एलिस चुप हो गई। भला इससे बढ़कर खुशी की बात उसके लिए क्या हो सकती थी !

"अच्छा, तुम इस नक्काल कछुए से कोई गाना सुनना पसन्द करोगी ?" ग्रिफन ने पूछा।

"गाना ? हां, हां, क्यों नहीं ? अगर कछुए साहब सुनाएं तो इससे बढ़कर खुशी की और क्या बात हो सकती है !" एलिस ने उत्तर दिया।

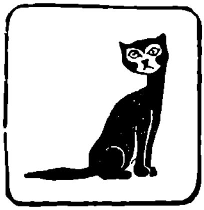
नक्काल कछुए ने एक गहरी आह भरी और फिर सिसकते हुए बड़े लटके के साथ गाना सुनाना शुरू किया। उसका गाना कुछ इस तरह था—"शोरबा, बढ़िया शोरबा, खूबसूरत शोरबा —शाम का शोरबा।"

एक बार गाना सुनाने के बाद कछुआ उसे फिर से दोहराने ही जा रहा था कि इतने में दूर किसीकी पुकार सुनाई पड़ी, "मुकदमा शुरू हो रहा है।"

"अरे, आओ, चलो जल्दी चलो।" ग्रिफन एलिस का हाथ पकड़कर उसे यहां से खींचते हुए कहने लगा। दोनों चल पड़े। उन्होंने कछुए का पूरा गाना भी नहीं सुना।

"कैसा मुकदमा है वह ?" एलिस ने हांफते-हांफते पूछा।

"चलो, चलो, जल्दी चलो।" ग्रिफन ने और भी तेज़ी से भागते हुए कहा। वे लोग भागे जा रहे थे और पीछे से कछुए की उदास आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह अब भी शोरबे के बारे में गाना गा रहा था।



11

जब दोनों वहां पहुंचे तो पान का बादशाह और बेगम एक सजे-सजाए तख्त पर बैठ चुके थे। उनके आसपास बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। तरह-तरह के छोटे-बड़े जीव-जन्तु वहां उपस्थित थे। इनके अलावा ताश के अन्य दूसरे पत्ते भी वहां मौजूद थे। सामने गुलाम जंजीरों में बंधा खड़ा था। उसके आसपास एक एक सिपाही तैनात था।

बादशाह के पास ही सफेद खरगोश खड़ा था। उसके एक हाथ में बिगुल और दूसरे में गोल लपेटा हुआ कोई लम्बा कागज़ था। अदालत के ठीक बीच में एक मेज़ पड़ी हुई थी, जिसपर कुछ कचौड़ियां रखी थीं। एलिस को उन्हें देखते ही भूख लग आई। उसने सोचा कि ये लोग मुकदमा रोक दें और ज़रा कचौ-ड़ियां बांट दें तो कितना अच्छा हो। लेकिन ऐसा लगता था कि यह मौका आना मुश्किल है। इसलिए वह अपने आसपास की चीज़ों को देखकर समय काटने लगी।

एलिस ने इसके पहले आज तक कभी कोई अदालत या राजा का दरबार नहीं देखा था। लेकिन उसने उनके बारे में किताबों में पढ़ रखा था। उसे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि वहां वह हर किसी को पहचानती थी। असल में बादशाह ही जज बना हुआ था। इस समय बादशाह कुछ अजीब-सा लग रहा था, क्योंकि उसने न्यायाधीशों की तरह नकली बाल लगा रखे थे और उनके

ऊपर मुकुट बांध रखा था। एलिस ने सोचा—वह जूरियों के बैठने की जगह है और ये बारहों पशु-पक्षी शायद जूरी मालूम पड़ते हैं। एलिस ने जूरी शब्द को बार-बार अपने मन में दोहराया। उसे यह सोचकर अपने ऊपर बड़ा गर्व हो रहा था कि वह जूरी का मतलब जानती है। उसे मालूम था कि उसकी उम्र की लड़कियों को इसके मतलब का पता नहीं रहता। जूरियों के हाथ में स्लेटें थीं।

बारहों जूरी अपनी-अपनी स्लेटों पर बड़ी तेज़ी से कुछ लिख रहे थे। एलिस ने धीरे से ग्रिफन से पूछा, "आखिर वे लोग कर क्या रहे हैं ? जब तक मुकदमा शुरू नहीं होता तब तक उनके पास लिखने के लिए क्या है ?"

"असल में वे लोग बार-बार अपने नाम लिख रहे हैं ताकि वे मुकदमा खत्म होने के पहले कहीं अपने नाम न भूल जाएं।"

"बड़े बेवकूफ मालूम होते हैं।" एलिस ज़रा ज़ोर से बोली, लेकिन अचानक वह चुप हो गई क्योंकि सफेद खरगोश चिल्ला रहा था, "खामोश, अदालत में शोर न करो।" और बादशाह अपनी आंखों पर चश्मा चढ़ाकर बहुत गौर से इधर-उधर देख रहा था कि अदालत में कौन बात कर रहा है।

एलिस ने ज़रा गर्दन फेरकर पीछे देखा कि जूरी लोग क्या लिख रहे हैं, तो यह देखकर उसके आश्चर्य की सीमा न रही कि उन्होंने लिखा था, "बड़े बेवकूफ मालूम होते हैं।" इसके अलावा शायद उन्हें लिखना भी नहीं आता था, क्योंकि उन विद्वान जूरियों में से बहुतों ने 'बेवकूफ' में 'कू' की मात्रा छोटी लगाई थी। एलिस को देखकर हंसी आ गई।

इसके अलावा एक जूरी जब अपनी स्लेट पर कुछ लिखता था तो उसकी पेंसिल बुरी तरह चरचराती थी। एलिस को यह बड़ा भद्दा लगता था। थोड़ी देर बाद उसके लिए यह सहन करना कठिन हो गया। अंत में वह उठी और घूमकर उसके पीछे पहुंची और उसकी पेंसिल छीन ली। उसने बहुत जल्दी यह सब



किया। उन छोटे-से जूरी साहब की (जो असल में एक छिपकली थी) समझ में नहीं आया कि उनकी पेंसिल कहां गई। अंत में मजबूर होकर वे अपनी उंगली से स्लेट पर लिखने लगे और दिन-भर इसी तरह लिखते रहे।

इतने में बादशाह ने हुक्म दिया, "मुकदमा पेश करो। मुजरिम

को हाज़िर करो।"

मुजरिम तो पहले से ही हाज़िर था। बेचारा ज़ंजीरों से बंधा खड़ा था। फिर भी सफेद खरगोश ने तीन बार अपना बिगुल बजाया। इसके बाद उसने अपनी बगल से वह लम्बा कागज़ निकाला और उसे ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर जुर्म सुनाना शुरू किया :

"एक दिन भरी दोपहर में,
पान की बेगम थी लहर में।
मसाला मंगाया सस्ता,
कचौड़ी बनाई खस्ता।
पान का गुलाम उचक्का,
देखता रहा भौचक्का,
नज़र बचाकर चुराई कचौड़ी,
मची है तभी से भागा-दौड़ी।"

अदालत में सन्नाटा छा गया। बड़ा भारी जुर्म था। लोगों के दिल धड़कने लगे कि देखें क्या सज़ा सुनाई जाती है।

"आप लोग अपनी राय दीजिए।" बादशाह ने जूरियों को जैसे डांटते हुए कहा।

"अरे नहीं-नहीं, अभी नहीं।" खरगोश बीच में ही बोला, "अभी तो बहुत कुछ बाकी है। अभी तो गवाह पेश होंगे।"

"अच्छा, पहले गवाह को बुलाया जाए।" बादशाह ने कहा।

सफेद खरगोश ने तीन बार बिगुल बजाया और फिर आवाज़ लगाई, "पहला गवाह, हैटवाला, हाज़िर हो!"

हैटवाला भागता हुआ आया। वह बड़ी हड़बड़ी में था। उसके एक हाथ में चाय का प्याला और दूसरे हाथ में टोस्ट था। वह हांफता हुआ बोला, "हुज़ूर, खता माफ फरमाएं। मैं ज़रा इन चीज़ों को साथ लेता आया हूं; क्योंकि जब मुझे हुज़ूर का हुक्म मिला, तब तक मैं अपनी चाय खत्म नहीं कर पाया था।"

"तुम्हें खत्म कर लेनी चाहिए थी," बादशाह ने कहा, "तुमने कब शुरू की थी चाय?"

हैटवाले ने अपने दोस्त बैसाखी खरगोश की ओर देखा, जो मोटे चूहे के हाथ में हाथ डाले उसके पीछे-पीछे अदालत में चला आया था। वह बोला, "मेरा ख्याल है, हुज़ूर, शायद चौदह मार्च को मैंने चाय पीनी शुरू की थी।"

"नहीं, पन्द्रह को!" बैसाखी खरगोश बोला।

"अरे नहीं, सोलह को!" मोटा चूहा अपनी पतली आवाज़ में बोला।

"यह सब दर्ज कर लिया जाए।" बादशाह ने जूरी को हुक्म दिया।

और जूरियों ने फौरन अपनी-अपनी स्लेटों पर गर्दन झुकाकर तारीखें नोट कर लीं। लेकिन एलिस ने देखा, उन्होंने न सिर्फ तीनों तारीखें दर्ज कीं, बल्कि उन सबको जोड़ डाला और फिर जोड़ का रुपया-आना-पाई बना लिया। एलिस को हंसी आ गई। अजीब-सी जूरी हैं ये सब। वहां मुकदमा हो रहा है और ये हिसाब लगा रहे हैं।

इतने में बादशाह ने हैटवाले को घुड़ककर कहा, "अरे, अपना हैट तो उतारो! अदालत में सिर खुला रखा जाता है, इतना भी तुम्हें नहीं मालम!"

"यह हैट मेरा नहीं है!" हैटवाला बोला।

"तो चुराया हुआ है? चोरी की तुमने?" बादशाह चीखा और उसने जूरियों को इशारा किया। जूरियों ने फौरन दर्ज कर लिया कि हैटवाला चोरी का हैट पहनता है।

"हुज़ूर, मैं तो हैट बेचता हूं, मेरे पास अपना कोई हैट नहीं है।" हैटवाले ने अपनी सफाई दी।

इतने में अचानक बेगम कुछ चौंकी। उसने फौरन अपना चश्मा निकाला और हैटवाले को गौर से देखना शुरू किया। वह बेचारा घबराया। उसका मुंह उतर गया और पांव कांपने लगे।

"चलो, अपना बयान दो। और घबराओ मत, वरना मैं यहीं तुम्हारा सिर उतरवा लूंगा।" बादशाह ने कहा।

इससे गवाह की हालत और भी खराब हो गई उसके पैर घबराहट में कांपते ही रहे। बेगम अभी तक उसकी ओर घूर रही थी। हैटवाले ने सहमी नज़र से एक बार उसकी ओर देखा, और घबराकर टोस्ट की बजाय चाय का प्याला काट लिया।

इसी बीच एलिस को कुछ गड़बड़ मालूम हुई। उसे लगा कि वह फिर से बढ़ने लगी है। उसने सोचा कि अदालत में ही लम्बाई बढ़े, इसके पहले मुझे यहां से चले जाना चाहिए। लेकिन फिर वह यह सोचकर वहीं बैठी रही कि अभी अदालत में मेरे लिए काफी जगह है।

इतने में मोटा चूहा, जो उसके पास ही बैठा था, कुनमुनाया, "तुम इस तरह मुझे दबाओ नहीं, तो बड़ा अच्छा हो। मैं तो सांस भी नहीं ले पा रहा हूं।"

"लेकिन मैं क्या करूं," एलिस ने बहुत विनम्रता से कहा, "मैं बढ़ जो रही हूं।"

"तुम्हें यहां अदालत में बढ़ने का कोई हक नहीं।" चूहा अपनी पतली आवाज़ में चीखा।

"बको मत, तुम खुद भी तो बढ़ रहे हो। देखो न पहले से कितने मोटे हो गए हो।"

"हां-हां, लेकिन मैं कायदे से बढ़ रहा हूं, तुम्हारी तरह नहीं कि देखकर हंसी आए। और तुममें कोई तहजीब भी नहीं।" यह कहकर वह उठा और बीच से अदालत का कमरा पार करके दूसरी ओर जा बैठा।

बेगम अभी तक हैटवाले को घूरे जा रही थी। अचानक उसे कुछ याद आया। उसने एक पेशकार को हुक्म दिया, "ज़रा उन गवैयों की फेहरिस्त तो लाना, जिन्होंने पिछली बार हमारे यहां गाना गाया था।" यह सुनते ही हैटवाला बुरी तरह कांपने लगा। घबराहट में उसने दोनों जूते उतार दिए।

लेकिन तभी बादशाह ने गुस्से में उसे डांटा, "अपना बयान जारी रखो, वरना मैं यहीं तुम्हारी गर्दन उतरवा लूंगा।"

हैटवाला कांपती हुई आवाज़ में बोला, "हुज़ूर, हुज़ूर, माई-बाप, मैं एक गरीब आदमी हूं। बहुत दिन की बात है, तब मैं चाय पीने नहीं बैठा था—कोई हफ्ता-भर हो गया था, और मुझे मक्खन और रोटी भी नहीं मिली थी, तब चाय की मुझे बहुत याद आती थी। एक दिन बैसाखी खरगोश कहने लगा···"

"नहीं, नहीं, मैंने कुछ नहीं कहा।" बैसाखी खरगोश ने फौरन टोका।

"तुमने कहा था।"

"नहीं, मैं इन्कार करता हूं।" खरगोश ने कहा।

बादशाह ने कहा, "खैर, वह इन्कार करता है, इसलिए उसकी बात छोड़ दो।"

"जी, बहुत अच्छा, लेकिन मोटे चूहे ने तो कहा ही था कि····" हैटवाले ने चूहे की ओर देखकर कहना शुरू किया। लेकिन चूहा कुछ नहीं बोला, क्योंकि वह सो रहा था।

"फिर इसके बाद मैंने कुछ मक्खन और रोटी खाई···" हैट-वाले ने अपना बयान जारी रखा।

"आंय! लेकिन मोटे चूहे ने क्या कहा था?" एक जूरी ने पूछा।

"वह मुझे याद नहीं रहा।" हैटवाला बोला।

"तुम फौरन याद करके बता दो, वरना अभी मैं तुम्हारा सिर उड़वा दूंगा।" बादशाह ने कहा।

इसपर हैटवाला बुरी तरह घबराया। उसके हाथ से चाय का प्याला और मक्खन-टोस्ट गिर पड़ा। वह घुटने के बल बैठ गया और गिड़गिड़ाने लगा, "हुज़ूर रहम कीजिए, मैं गरीब आदमी हूं। बहुत गरीब हूं, हुज़ूर।"

"तुम्हारी भाषा बहुत गरीब है, तुम्हें बोलना नहीं आता!" बादशाह ने कहा।

बादशाह की यह बात एक सूअर को पसन्द आई। उसने हंस कर ताली बजा दी। लेकिन फौरन अदालत के चपरासी और

अर्दलियों ने मिलकर उसे दबा दिया। उन्होंने यह काम बड़े अजीब ढंग से किया। पहले तो उन्होंने एक बोरा लिया और उसमें उस सूअर की गर्दन डाली। फिर उसे पूरा अंदर ठूंस दिया और बोरे का मुंह रस्सी से कस दिया। फिर वे उसके ऊपर चढ़कर बैठ गए।

एलिस ने अक्सर अखबार में मुकदमों के समाचार पढ़े थे, जिनमें लिखा होता था कि जब अदालत में शोर मचा तो फौरन उसे अधिकारियों द्वारा दबा दिया गया। एलिस समझ ही नहीं पाती थी कि शोर को दबाया कैसे जाता है। 'आज' उसने अपने मन में कहा, 'आज मैं समझी कि शोर को किस तरह दबाया जाता है !'

बादशाह ने हैटवाले के बयान से चिढ़कर कहा,"अगर तुम्हें इतना ही कहना है तो अब जाओ, नीचे खड़े हो जाओ।"

"लेकिन इससे ज्यादा नीचे कैसे जाऊं ? मैं तो ज़मीन पर खड़ा हूं।" हैटवाले ने कहा।

"तो ठीक है ; तुम बैठ जाओ न !" बादशाह ने कहा।

इसपर फिर एक सूअर को हंसी आ गई, और उसे भी दबा दिया गया। 'चलो, यह अच्छा हुआ, दोनों सूअर बन्द कर दिए गए। अब अदालत का काम शांति से चल सकेगा।' एलिस ने अपने मन में कहा।

"मैं तब तक ज़रा अपनी चाय खत्म कर लूं।" हैटवाला बेगम की ओर देखकर डरते-डरते बोला। बेगम उस समय गवैयों की फेहरिस्त में उसका नाम ढूंढ़ रही थी।

इतने में बादशाह ने हैटवाले से कहा, "तुम जा सकते हो।" और हैटवाला फौरन वहां से भाग खड़ा हुआ। उसने रुककर अपने जूते भी नहीं पहने।

तब तक बेगम को फेहरिस्त में उसका नाम दिखाई दे गया। उसने फौरन एक सिपाही को हुक्म दिया,"बाहर जाकर उसकी गर्दन काट लो।"

लेकिन सिपाही जब तक बाहर पहुंचा, हैटवाला वहां से गायब हो चुका था।

"दूसरे गवाह को हाज़िर करो।" बादशाह ने हुक्म दिया।

दूसरे गवाह की पुकार हुई। अचानक अदालत के बाहर रास्ते में खड़े हुए लोग छींकने लगे। साथ में मिर्च की डिब्बी लिए हुए डचेज़ की बावर्चिन हाज़िर हुई। लोगों के छींकने से ही एलिस ने अन्दाज़ लगा लिया था कि दूसरा गवाह कौन हो सकता है। बावर्चिन अदालत में भी मिर्च बिखेरने लगी।

बादशाह ने हुक्म दिया, "अपना बयान दो।"

बावर्चिन बोली, "मैं नहीं दूंगी।"

बादशाह की समझ में कुछ नहीं आया कि क्या किया जाए। वह अपने पेशकार खरगोश की ओर देखने लगा। खरगोश ने राय दी, "हुज़ूर, इस गवाह से सवाल करें।"

"ठीक है, अगर मुझे सवाल करना है, तो करूंगा ही।" बादशाह ने अपने हाथ बांधकर और भौंहें सिकोड़कर बावर्चिन की ओर देखते हुए कहा। उसने अपनी आंखें सिकोड़ लीं और गम्भीर आवाज़ में पूछा, "कचौड़ी किस चीज़ से बनती है?"

"ज्यादातर मिर्च से।" बावर्चिन बोली।

"गुड़ से!" किसीने उसके पीछे से ऊंघती हुई आवाज़ में कहा।

"इस चूहे का गला दबा दो।" बेगम चीखी, "इस चूहे की गर्दन उड़ा दो। इसे अदालत से बाहर निकाल दो!"

कुछ देर तक अदालत में काफी गड़बड़ मची। किसी तरह खींचकर धक्के मारते हुए उस मोटे चूहे को अदालत से बाहर किया गया। बड़ी मुश्किल से अदालत में शांति स्थापित हुई। लेकिन तब तक वह बावर्चिन न मालूम कहां भाग चुकी थी।

"खैर, कोई बात नहीं!" बादशाह ने राहत की सांस लेते हुए कहा, "अच्छा, दूसरे गवाह को पेश किया जाए!" और फिर उसने धीरे से बेगम से कहा, "बेगम साहब, अब दूसरे गवाह से

ज़रा आप ही सवाल कीजिए, मेरे सिर में दर्द हो रहा है।"

सफेद खरगोश अपने कागज़ में दूसरे गवाह का नाम खोजने लगा। एलिस बड़ी उत्सुकता से उसकी ओर देखने लगी। उसने सोचा, "देखें, अब कौन गवाह आता है, क्योंकि अभी तक ये लोग गुलाम के खिलाफ कोई सबूत नहीं पेश कर सके थे। लेकिन तभी सफेद खरगोश ने अपनी बारीक आवाज़ में चीखकर पुकारा, "एलिस! अब एलिस गवाही देगी!"

गवाहों में अपना नाम सुनकर एलिस को कितना आश्चर्य हुआ होगा!



12

"हाज़िर है!" एलिस ने जवाब दिया। जवाब देते हुए वह अचानक उठ खड़ी हुई। लेकिन हड़बड़ी में वह यह भूल गई कि इस बीच वह काफी बड़ी हो गई थी! ज्योंही वह खड़ी हुई कि उसके धक्के से जूरी लोगों के बैठने का कटघरा टूट गया, और वे लोग एक के ऊपर एक ज़मीन पर आ गिरे। अदालत में चीख-पुकार मच गई।

"ओह, मुझे बड़ा अफसोस है! मैं माफी चाहती हूं!" एलिस ने शरमाते हुए कहा।

"मुकदमा नहीं हो सकता। जब तक सारे जूरी अपनी जगह फिर से नहीं बैठ जाते, तब तक के लिए अदालत खारिज!" बादशाह ने एलिस को कड़ी निगाह से देखते हुए कहा।

एलिस ने मुड़कर जूरियों की ओर देखा। उनमें छिपकली सबसे नीचे दबी हुई थी और उसकी पूंछ हिल रही थी। एलिस को उसपर दया आ गई। उसने उसे उठाकर उसकी जगह बिठा दिया।

धीरे-धीरे जूरी लोग गिरते-पड़ते अपनी-अपनी जगह आ बैठे। वे सब बुरी तरह घबराए हुए थे। उनकी स्लेटें गायब हो गई थीं। स्लेटें खोजी गईं। उन्होंने फौरन गर्दन झुकाकर इस घटना को दर्ज करना शुरू किया। सिर्फ छिपकली ही कुछ नहीं लिख रही थी। वह इतनी घबरा गई थी कि मुंह खोले और आंखें फाड़े छत की ओर ही देखती रही।

"इस मामले के बारे में तुम क्या जानती हो ?" बादशाह ने सवाल किया।

"कुछ नहीं।" एलिस बोली।

"बिलकुल कुछ नहीं ?"

"यह खास बात है।" बादशाह ने जूरी की ओर देखते हुए कहा। वे लोग अपनी-अपनी स्लेटों में दर्ज करने ही जा रहे थे कि इतने में सफेद खरगोश बीच में बोला, "नहीं नाखास ! बादशाह सलामत का यही मतलब है।" और उसने चुपके से इशारे से बादशाह को डांट दिया।

बादशाह फौरन बोला, "हां-हां, मेरा मतलब नाखास से ही था।" फिर वह दबी हुई आवाज़ में रटने लगा, "खास···नाखास नाखास···खास।"

इसका नतीजा यह हुआ कि जूरियों में से कुछ ने खास दर्ज किया और कुछ ने नाखास। एलिस बड़ी आसानी से उन लोगों की स्लेटें देख रही थी। उसने अपने मन में कहा,'उंह, इससे होता क्या है !'

बादशाह भी अपनी किताब में कुछ दर्ज करने लगा था। अचानक वह बोला, "खामोश।" फिर उसने किताब उठाई और पढ़ना शुरू किया, "दफा 42—ऐसे सब लोग जो एक मील से

ज़्यादा लम्बे हैं, अदालत के बाहर हो जाएं।"

सब लोग एलिस की ओर देखने लगे। वह बोली, "मैं एक मील लम्बी नहीं हूं।"

"नहीं, तुम हो!" बादशाह बोला।

"हां-हां, करीब दो मील लम्बी हो!" बेगम बोली।

"खैर, मैं यहां से जाऊंगी नहीं। और फिर यह कोई हमेशा का कानून नहीं है, इसे तुमने अभी बनाया है।"

"नहीं, यह इस किताब का सबसे पहला कानून है।" बादशाह ने कहा।

"अगर ऐसा है तो इसका नम्बर एक होना चाहिए।" एलिस बोली।

बादशाह को उसका जवाब नहीं सूझा। उसका चेहरा उतर गया। उसने किताब बन्द कर दी। फिर उसने कांपती हुई आवाज़ में जूरी से कहा, "आप लोग अपनी राय दीजिए।"

"नहीं-नहीं हुज़ूर, अभी और सबूत पेश होना बाकी है।" सफेद खरगोश ने उछलते हुए कहा, "अभी-अभी यह कागज़ बरामद हुआ है।"

"इसमें क्या लिखा है?" बेगम ने पूछा।

सफेद खरगोश बोला, "मैंने अभी इसे खोला नहीं है, लेकिन लगता है कि यह एक चिट्ठी है, जो किसीने कैदी को लिखी है।"

"हां, यह ज़रूर कैदी को लिखी गई होगी।" बादशाह ने अचानक तनकर बैठते हुए कहा।

"यह किसके नाम है!" एक जूरी ने पूछा।

"असल में यह किसीके भी नाम हो सकती है, क्योंकि इसपर किसीका नाम नहीं लिखा है।" सफेद खरगोश ने कहा। फिर कागज़ खोलकर थोड़ी देर तक उसे पढ़ने के बाद वह बोला, "खैर, यह चिट्ठी नहीं है, इसमें एक कविता लिखी हुई है। कुछ दोहे जैसे लगते हैं।"

"क्या यह कैदी की लिखावट है?" दूसरे जूरी ने पूछा।



"नहीं, और यही सबसे अजीब बात मालूम होती है।"

जूरियों की समझ में कुछ नहीं आया। वे आश्चर्य से एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

"उसने ज़रूर किसी दूसरे की लिखावट की नकल की होगी।" बादशाह बोला।

बादशाह की यह बात सुनकर जूरियों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

गुलाम घबराकर बोला, "नहीं-नहीं हुज़ूर, मैंने इसे नहीं लिखा है। और इन लोगों के पास कोई सबूत भी नहीं है कि मैंने ही इसे लिखा है। इसके नीचे किसी के दस्तखत नहीं हैं।"

बादशाह ने चौंकते हुए कहा, "आंय ! कोई दस्तखत नहीं हैं? तब तो यह और भी बुरी बात है। तुमने दस्तखत क्यों नहीं किए? तुम ज़रूर कोई शरारत करना चाहते होगे, वरना एक ईमानदार आदमी की तरह तुम अपने दस्तखत कर देते।"

बादशाह की इस दलील पर अदालत में तालियां बज उठीं। आज बादशाह ने ये सबसे पहली बुद्धिमानी की बात की थी।

इतने में बेगम बोली, "इससे इसका जुर्म साबित होता है। इसलिए फौरन इसका सिर…"

एलिस ने उसे रोककर कहा, "नहीं, इससे कुछ साबित नहीं होता। और आपको पता ही क्या कि उसमें लिखा क्या है?"

"तो इसे पढ़ा जाए।" बादशाह ने हुकुम दिया।

"सफेद खरगोश ने अपना चश्मा चढ़ाया और फिर पूछा, "हुज़ूर, कहां से पढ़ना शुरू करूं?"

बादशाह ने गम्भीरता से कहा, "शुरू से पढ़ते जाओ। जब तुम अन्त तक पहुंच जाओ तब रुक जाना।"

अदालत में खामोशी छा गई। सफेद खरगोश ने पढ़ना शुरू किया :

"तुमने मेरी चुगली खाई, जाकर करी शिकायत।
मुझे तैरना नहीं आता, करता हूं मैं किफायत।

यहां तो सभी जान गए, उसने भी तो कहा होगा।
अगर वह मामला आगे बढ़ाए, तो तुम्हारा क्या होगा ?
मैंने उसे एक ही दी थी, उसने ले लीं दोनों।
अब तो बात फैल गई है, देखना हम फंसेंगे दोनों।
भला चाहो तो भेद न बताना, अब चुप रहना कुछ न जताना।"

"यह तो सबसे कीमती सबूत है। इससे पक्की बात और क्या होगी !" बादशाह ने खुशी से अपने हाथ मलते हुए कहा, "अच्छा, अब जूरी लोग अपनी राय दें।"

उसने बादशाह की बात काटते हुए कहा, "हुंह, इन लोगों में से अगर कोई इस कविता का मतलब बता दे तो मैं उसे एक पच्चीस का सिक्का इनाम दे सकती हूं। यह पूरी कविता बेकार की बक-वास है, इसके रत्ती भर भी माने नहीं।"

इसपर जूरियों ने अपनी पेंसिलें संभालीं और अपनी स्लेटों में लिखा, "इस लड़की का कहना है कि यह पूरी कविता बेकार की बकवास है, इसमें रत्ती-भर भी माने नहीं !" लेकिन जूरियों में से किसीने भी कविता का अर्थ निकालने की कोशिश नहीं की।

बादशाह बोला, "अगर इसके कोई माने ही नहीं, तब तो और भी अच्छा है, सारी समस्या ही हल हो गई। अब हमें इसके माने निकालने के लिए माथापच्ची नहीं करनी होगी।" यह कह कर उसने खरगोश के हाथ से वह कागज़ ले लिया और उसे अपने घुटने पर फैलाकर पढ़ना शुरू किया।

वह एक आंख बन्द किए, एक ही आंख से पढ़ रहा था। अचानक वह बोला, "लेकिन मुझे तो इसमें कुछ माने दिखाई देते हैं। इसमें लिखा है, 'मुझे तैरना नहीं आता'—क्यों जी, तुम तैर नहीं सकते, है न ?" उसने कैदी से सवाल किया।

गुलाम ने अफसोस के साथ अपना सिर हिलाते हुए कहा, "क्या मुझे देखने से ऐसा ही लगता है ? मैं तो···" असल में वह पूरा कागज़ का बना था, इसलिए तैरना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी।

"खैर, ठीक है, आगे चलो। इसमें लिखा है—'यहां तो सभी जान गए'—मेरे खयाल से यहां जूरी लोगों की ओर इशारा किया गया है। फिर लिखा है—'अगर वह मामला आगे बढ़ाए'—इसका मतलब बेगम से है। अरे वाह, क्या बात है। साफ-साफ तो कहता है—'मैंने उसे एक ही दी थी,' मतलब साफ है, कचौड़ियां चुराकर इसने दूसरों को बांट दीं।"

एलिस ने विरोध किया। लेकिन बादशाह ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। आगे कहा, "इससे साफ और कोई क्या कहेगा—अब तो बात फैल गई है, हम फंसेंगे दोनों ! अच्छा फिर आगे कहा गया है—'भला चाहो तो भेद न बताना'—क्यों बेगम, तुम्हारा तो कभी कोई भेद नहीं रहा, है न ?"

"नहीं, कभी नहीं।" बेगम गुस्से में चीखी और उसने दवात उठाकर छिपकली पर फेंक मारी। छिपकली ने बहुत देर से लिखना बन्द कर दिया था। वह स्लेट पर अपनी उंगली फेरते-फेरते थक गई थी। सिर पर दवात के गिरते ही वह चौंकी। उसके मुंह पर स्याही फैल गई। उसने उसीमें उंगली चुपड़कर लिखना शुरू कर दिया।

"ओह, इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं।" बादशाह ने मुस्कराकर कहा। लेकिन फिर अचानक वह गुस्से में भरकर बोला, "लेकिन इसमें तुमसे मज़ाक किया गया है। इन शब्दों का दोहरा मतलब निकलता है। जूरी अपनी राय दे।"

"नहीं, नहीं।" बेगम चीखी, "सज़ा पहले, राय बाद में।"

"यह भी कैसी बकवास है। सज़ा पहले, राय बाद में ?" एलिस ने चिल्लाकर कहा।

"अपनी ज़बान बन्द करो।" बेगम ने गुस्से में लाल होते हुए कहा।

"नहीं करूंगी।" एलिस ने जवाब दिया।

"इस लड़की का सिर फौरन काट लिया जाए ?" बेगम खूब ज़ोर से चीखी। लेकिन कोई आगे नहीं बढ़ा।

"तुम्हारी यहां परवाह किसे है।" एलिस ने कहा। अब वह अपने पूरे कद में आ गई थी। उसे अब किसी का डर नहीं था, "तुम लोग हो ही क्या, सिर्फ ताश के पत्ते ही तो हो ?"

इस पर सारे पत्ते एकदम से हवा में उड़े और एलिस पर



बरस पड़े। एलिस कुछ तो डरकर और कुछ गुस्से के कारण चीख पड़ी और ज़ोरों से अपने हाथ चलाने लगी।

अचानक एलिस ने आंखें खोलीं, तो देखा कि वह नदी-किनारे अपनी बहिन की गोदी में लेटी है और उसकी बहिन उसके चेहरे और बालों पर हाथ फेरकर उन सूखी पत्तियों को झाड़ रही है, जो उसपर आ गिरी थीं।

"एलिस, एलिस। बहिन, उठो न।" उसकी बहिन उसे जगाने की कोशिश कर रही थी, "उठो, कितनी देर से तुम सो रही हो।"

"ओह, दीदी, मैंने एक बड़ा अजीब-सा सपना देखा।" एलिस बोली और उठकर बैठ गई।

फिर उसने अपनी बहिन को वे सारी घटनाएं कह सुनाईं जो उसने सपने की जादूनगरी में देखी थीं। थोड़ी देर के लिए तो उसे बार-बार भ्रम हो जाता था कि वह अब भी जादूनगरी में ही है। लेकिन अपनी बड़ी बहिन को सामने पाकर उसे विश्वास हुआ कि वह सपने की दुनिया से सच्ची दुनिया में आ गई।

किस्सा सुनकर उसकी बहिन बोली, "हां, सचमुच बड़ा अजीब सपना देखा तुमने। अब तुम घर चलो। मां नाश्ते के लिए बुला रही है।"

एलिस बहिन के साथ घर की ओर चल पड़ी।

●●●

मुद्रक ; मित्तल प्रिंटर्स शाहदरा, दिल्ली 283112

किशोरों के लिए साहित्य

ये पुस्तकें विश्वविख्यात उपन्यासों एवं कहानियों के किशोरोपयोगी संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल और शैली बड़ी रोचक है। बालक बड़े चाव से इन पुस्तकों को पढ़ेंगे।

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमार खां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (The Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (20 Thousand Leagues Under the Sea)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
काला घोड़ा (Black Beauty)
साहसी राबिन्सन (Swiss Family Robinson)

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६